भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 13 **मई** 2012 **अंक** 5

पुस्तकें

हिन्दी में एक बड़ी समस्या पुस्तकों की पर्याप्त दुकानें न होना है। जो पहले थीं भी वे धीरे-धीरे बन्द या गायब हो रही हैं। पुस्तक विक्रेताओं को शायद अधिक आय नहीं होती और जो होती भी है वह खासी विलम्बित लय में मिलती है। दिल्ली में ही पुस्तकों की कोई अच्छी दुकान नहीं है। हिन्दी के अधिकांश बड़े प्रकाशक दिल्ली में हैं : फिर भी उन्हें अपनी ही पुस्तकें इसी शहर में सुलभ कराने में कोई दिलचस्पी नजर नहीं आती। हिन्दी समाज, विशेषत: उसका पढ़ा-लिखा मध्यवर्ग पुस्तक-प्रेमी नहीं है, पर उनमें से जो भी थोड़े-बहुत पुस्तकें खरीदना चाहते हैं उनकी स्थायी शिकायत यह है कि पुस्तकें मिलती नहीं हैं।

इस स्थिति से निपटने के लिए कोई कारगर व्यवस्था प्रकाशकों को ही मिल-बैठकर बनानी चाहिये। हमारे यहाँ अंग्रेजी पुस्तकों की कई दुकानों की शृंखलाएँ हैं, जो कई शहरों में हैं। विदेश में तो ऐसी दुकानों की लम्बी और सशक्त परम्परा कम से कम एक सदी पुरानी है। इस सबको ध्यान में रखकर यह किया जा सकता है कि हिन्दी के बड़े प्रकाशक मिलकर हिन्दी अंचल में सौ दुकानें अगले तीन वर्ष में स्थापित करने का लक्ष्य बनाएँ। सभी दुकानों का एक ही नाम हो जैसे 'पुस्तकें'। उसका एक प्रतीक चिह्न बना लिया जाय, जो हर दुकान में इस्तेमाल हो। इस उपक्रम में शामिल सभी प्रकाशक अपने प्रकाशन इन दुकानों में आसान और व्यावहारिक शर्तों पर रखने को तैयार हों और चुने गए शहर में किसी एक पुस्तक विक्रेता को फ्रेंचाइजी देने की कोशिश करें। अन्य ब्योरे तय किये जा सकते हैं। नये प्रकाशनों की नियमित घोषणा इन दुकानों के माध्यम से की जा सकती है पोस्टर आदि का इस्तेमाल कर। ऐसी दुकानों पर नयी पुस्तकों पर नियमित चर्चा आदि भी आयोजित की जा सकती है। इसकी भी हिन्दी में कभी परम्परा थी जो अब शिथिल पड़ गई है।

दुकानों की शृंखला के माध्यम से पाठक-मंच आदि भी विकसित किये जा सकते हैं। जाहिर है यह सब करने के लिए कुछ बुद्धि, कुछ पूँजी चाहिये। उनका हमारे प्रकाशकों में अभाव है यह मानने का कोई कारण या आधार दिखाई नहीं देता। अलबत्ता मिलकर कुछ करने की आदत शायद नहीं है। पर अगर हिन्दी पुस्तक-संस्कृति पोसना-बढ़ाना है, तो कुछ ठोस करना होगा और आदत नहीं है तो संकोच आदि तजकर कुछ

शेष पृष्ठ 5 पर

गमलों में उगे हुए लोग

पिछले महीने मधुमास में लगाये गये पौधे खाद-पानी पाकर खिल उठे हैं, कुछ में तो फूल भी आ गये हैं। इधर गर्मी का पारा चढ़ रहा है, गरम-हवा में भी अठखेलियाँ करती धूलि-धूसरित प्रकृति, जंगलों-पहाड़ों-मैदानों को भीतर तक तपाती, नदियों का पानी सोखती, रेगिस्तानी रेत के बवंडर के बीच रुद्र-नृत्य करती है। सृजन-प्रलय की क्रीड़ा का यह भी एक मोहक-अन्दाज़ है जिसके आनन्द की अनुभूति से वंचित यह अल्पप्राण-मनुष्य अपने 'एयरकंडीशंड-टॉवर' में 'बोनसाई शैली' के जंगल उगा रहा है।

समझ में नहीं आता कि आखिर क्या हो गया है हमारे चिन्तकों, बुद्धिजीवियों को, जो अपने-ही बनाये छोटे-छोटे दायरों में मगन हैं? यूरोपीय-पर्यटकों की झूठी-वाहवाही से 'कल्चरल'-गौरव का अहसास पाले हुए लोग इतने आत्म-मुग्ध हैं कि उन्हें न तो नस्लवादी हमले दिखायी पड़ते हैं न ही अपने राष्ट्रीय-सांस्कृतिक प्रतीकों के साथ खिलवाड़। वे अपनी प्रतिबद्धता में इस क़दर 'सेकुलर' और प्रगतिशील हैं कि उन्हें हमारी हर बात 'कम्युनल' और प्रतिक्रियावादी मालूम होती है और हो भी क्यों न, उन्हें तो पश्चिम के अकादमिक-संस्थानों ने सम्मान दिया है, पुरस्कारों से नवाज़ा है और वे राष्ट्रीय-गौरव हैं, महिमामंडित-बुद्धिजीवी हैं।

हमारे अतीत और वर्तमान का विश्लेषण करती पश्चिम की अकादमिक-दृष्टि हमेशा से पूर्वाग्रह-ग्रस्त रही है। उपनिवेशवाद के साथ उभरी नस्लवादी शासकीय-श्रेष्ठता का दंभ और पश्चिमी-मूल्यों, प्रतिमानों को स्थापित करने का आग्रह इतना ज़बरदस्त रहा है कि उन्होंने भारतीय इतिहास को अपने ही अनुसन्धानों से प्रमाणित करते हुए हमारे पाठ्यक्रम पर लागू कर दिया, हमारी सांस्कृतिक-पुनर्व्याख्या के लिए उन्हीं के शोधार्थी विभिन्न प्रायोजनाओं पर काम करने लगे। इसी दौर में सबसे पहले भाषिक-आधार पर उन्होंने 'आर्य-द्रविड़' विभाजन किया, फिर धार्मिक आधार बनाकर 'हिन्दू-मुसलमान' के बीच वैमनस्य को जन्म दिया फिर अंतत: हमारे टुकड़े भी कर दिये। अब वे सात-समंदर पार से लम्बी दूरी के हथियारों का इस्तेमाल कर रहे हैं। इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर, इंटरनेट, गूगल की तरह उनके प्रक्षेपास्त्र हैं हमारे बुद्धिजीवी जो उनके द्वारा पोषित एवं पुरस्कृत हैं और उन्हीं की भाषा बोलते हैं। हमारे सत्ता-प्रतिष्ठान के द्वारा संचालित मुक्त-बाजार-व्यवस्था ने उनका रास्ता खोल दिया है और वे उन्मुक्त-भाव से स्व-निर्धारित प्रतिमानों का प्रचार-प्रसार एवं क्रमश: संस्थापन कर रहे हैं।

'आ नो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:' वाली हमारी मानसिकता पता नहीं कहाँ रुद्ध हो गयी है। वैश्वक-स्तर पर चारों ओर से आ रही शुभंकर, कल्याणवाही भावनाओं, विचारों का स्वागत करने वाली हमारी आदिम-दृष्टि क्यों धुँधली पड़ गयी है कि वह शुभाशुभ नहीं पहचान रही और अपनी आने वाली पीढ़ियों को अनजाने-ही-सही उसी

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

पश्चिमी-अकादमिक-मानसिकता में ढाल रही है? भारत-विरोधी यह मानसिकता हमारी विकास-यात्रा के बीच राष्ट्रीय-विखण्डन और सामाजिक-विघटन तलाश रही है। हमारे विकास के प्रत्येक चरण पर पैनी-दृष्टि जमाये उनके प्रच्छन्न-गुप्तचर हरेक मंजिल व मोड़ पर अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। वे राजनीति में हैं, शिक्षा में हैं, संस्कृति में हैं, व्यापार में हैं, खेल में हैं, मनोरंजन में हैं। पश्चिम की इस सक्रिय ब्राह्मी-व्याप्ति ने सचमुच संकट पैदा कर दिया है और क्रमशः अपनी अस्मिता खोते हुए, अपने जीवन-मूल्यों को नकारते हुए अपने प्रतीकों, प्रतीक-चिह्नों को तोड़ते हुए हमारी 'जाति' आत्म विनाश के कगार पर है।

तथाकथित महान बुद्धिजीवियों, मुट्ठी-भर सम्पन्न लोगों के अलावा यहाँ सभी विस्थापित हैं या बँटे हुए हैं। धर्म, भाषा और जाति की प्राथमिक इकाई के बाद प्रान्त-पार्टी की सीमायें कथित समग्र-विकास के बीच मनुष्य के मनोविकास की अवरोधक बन रही हैं। आज हर कोई आत्म-केन्द्रित हो रहा है। अपने हर छोटे-बड़े काम के लिए सरकारी-दफ्तरों का 'सुविधा-शुल्क' चुकाकर जीवन बसर कर रहा है। पश्चिमी-पैमाने से यही आदमी उनका शिकार है। अपने समाज की गरीबी, भुखमरी, दरिद्रता, अस्पृश्यता आदि को उभारते हमारे बिके हुए बुद्धिजीवी जिस मध्यवर्ग को कोसते हैं वही मध्यवर्ग अपनी सीमाओं में स्त्री का सम्मान करना जानता है, दलित-अस्पृश्य में भी ईश्वर का अंश देखता है। वह पश्चिम की उच्छृंखलता नहीं बर्दाश्त करता, उनकी अकादमिक जूठन से अपनी उत्तर-आधुनिक व्याख्या नहीं करता। अपने अतीत में भी वह विकासशील रहा है और वर्तमान में भी प्रगतिशील है। उत्तरोत्तर विकास-धारा में प्रवाहित, विकसित जाति को किसी 'वाद-सापेक्ष' चौखटे में बाँधना निहायत मुश्किल है। उसकी अपनी राष्ट्रीय-चेतना है, सामाजिक-मूल्य हैं, सांस्कृतिक-प्रतीक हैं जिन पर उसे गर्व है और शायद इसीलिए वह प्रतिगामी है, प्रतिक्रियावादी है।

भारतीय मध्यवर्ग पर निशाना लगाते पश्चिमी चश्मे के बौद्धिक-विद्रूप को देखकर फूट पड़ता है कवि-कण्ठ—

कुहनी पर टिके हुए लोग
अवसर पर बिके हुए लोग
बरग़द की बात करते हैं
गमलों में उगे हुए लोग।

सर्वेक्षण

● **एक दिवस और :** फिर याद आ गयीं किताबें। काफी देर इंटरनेट पर गुज़ारे, गूगल 'सर्च' की, चैट किया, ट्वीट किया, फिर भी लगा कि सम्प्रेषण की इस दुनिया में यह सब-कुछ सम्मोहक है, दिलक़श है मगर जिसकी तलाश थी वह न मिला। अचानक दिमाग में कौंध गया कि 'अरे हम तो महरूम होते जा रहे हैं अपनी चिर-संगिनी पुस्तकों से। वही पुस्तकें जिन्होंने हमारे बचपन को संस्कार-दुलार दिये, हमारे कैशोर्य को उद्‌बोधित कर जवानी को प्रेरणा दी और और अपने मौन-संकेत से हमारा पथ प्रशस्त किया। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गये पुस्तकें छूटती गयीं और नये युग की नयी साथी बनकर आ गयीं इलेक्ट्रॉनिक मशीनें। मगर एक क्षण वह भी आया जब मशीनों ने अपनी सीमा बता दी। इसी पशोपेश में अपनी समस्या का समाधान पाने के लिये फिर किसी असीम की ज़रूरत आ पड़ी और याद आ गयीं किताबें।

विश्व-पुस्तक-दिवस (23 अप्रैल) के सन्दर्भ में निकट-भविष्य का यह छोटा-सा काल्पनिक-चित्र उभर रहा था और वह दिवस बीत रहा था आखिर एक पुस्तक में मुझे अपनी समस्या का समाधान मिल गया और यांत्रिक-शक्ति की सीमाएँ भी समझ में आ गयीं।

●● **बोतल का जिन्न :** तथाकथित माननीय अपराधी महोदय के खिलाफ हमारी सी०बी०आई० ने अपनी जाँच खत्म करते हुए, फाइल बन्द की यानी एक जिन्न से पीछा छुड़ाकर बमुश्किल उसे बोतल में बन्द किया। मगर 25 साल का अन्तराल पार करते हुए स्वीडन के तत्कालीन पुलिस प्रमुख लिंडस्ट्राम ने एक साक्षात्कार क्या दिया कि बन्द बोतल का जिन्न बाहर आ गया और हमारी संसद में हंगामा बरपा हो गया। वैसे ही हमारी सरकार बढ़ती मँहगाई, पेट्रोल-डीज़ल की कीमतें, भ्रष्टाचार आदि कई अहम मुद्दों से घिरी हुई है उसी दरम्यान इस बोतल-बन्द जिन्न का पुनर्प्रादुर्भाव एक बड़ी मुसीबत का सबब बन सकता है। दूसरी ओर बोफोर्स के इस जिन्न ने जनप्रिय-अभिनेता अमिताभ बच्चन को मुक्त कर उनके अतीत का कृष्ण-पक्ष उज्ज्वलित कर दिया।

●● **रक्षत गङ्गाम् :** पिछले अंक की इस बात को फिर दुहराने की वजह बनी 17 अप्रैल की निर्धारित तारीख, जिस दिन प्रधानमंत्री ने इस विषय पर बैठक तो बुलायी मगर बेनतीजा रही यह बैठक, फिलहाल काशी में अनशन का सिलसिला जारी है। विभिन्न संस्थाओं, विश्वविद्यालयीय-छात्रों और सामान्य नागरिकों के सहयोग से गंगा की निर्मलता-अविरलता हेतु यह तपस्या अब जनांदोलन का रूप धारण कर चुकी है। वस्तुतः यह आन्दोलन यदि गंगा के साथ-साथ सप्तसिन्धु यानी गंगा-यमुना-गोदावरी-सरस्वती-नर्मदा-सिन्धु-कावेरी और उनकी सभी सहायक नदियों, जलधाराओं की प्रदूषण-मुक्ति एवं अविरलता हेतु किया जाता तो इसे देशव्यापी समर्थन भी मिलता और जल-संकट के इस दौर में हजारों भगीरथों की तपस्या से हिमालय भी द्रवित हो उठता।

हो गयी है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

—परागकुमार मोदी

मेरी लाइब्रेरी की पहली किताब

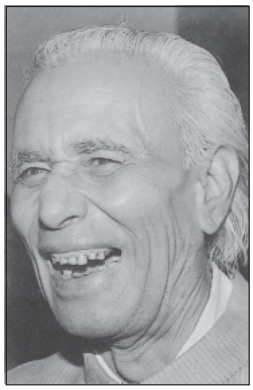

धर्मवीर भारती
25.12.1926 – 04.09.1997

सुप्रसिद्ध कवि, उपन्यासकार, पत्रकार **धर्मवीर भारती** की लाइब्रेरी से अच्छे-अच्छे रश्क करते थे। उनकी लाइब्रेरी में कैसे आई पहली किताब!

इनाम में स्कूल से दो अंग्रेजी किताबें मिली थीं। एक में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और कुंजों में भटकते हैं और इस बहाने पक्षियों की जातियाँ, उनकी बोलियाँ, उनकी आदतों की जानकारी उन्हें मिलती है। दूसरी किताब थी 'ट्रस्टी द रग' जिसमें पानी के जहाजों की कथाएँ थीं। कितने प्रकार के होते हैं, कौन-कौन-सा माल लाद कर लाते हैं, कहाँ से लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, नाविकों की जिन्दगी कैसी होती है, कैसे-कैसे जीव मिलते हैं, कहाँ व्हेल होती है, कहाँ शार्क होती है!

इन दो किताबों ने एक नयी दुनिया का द्वार मेरे लिए खोल दिया। पक्षियों से भरा आकाश, और रहस्यों से भरा समुद्र। पिता ने अलमारी के एक खाने में अपनी चीजें हटा कर जगह बनायी और मेरी दोनों किताबें उस खाने में रख कर कहा, 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है।' यहाँ से आरम्भ हुई उस बच्चे की लाइब्रेरी। बच्चा किशोर हुआ, स्कूल से कॉलेज, कॉलेज से यूनिवर्सिटी गया, डॉक्टरेट हासिल की, यूनिवर्सिटी में अध्यापन किया, अध्यापन छोड़ कर इलाहाबाद से बम्बई आया, सम्पादन किया उसी अनुपात में अपनी लाइब्रेरी का विस्तार करता गया।

> "दो रुपये लेकर देवदास फिल्म देखने गया। पहला शो छूटने में देर थी, पास में किताब की दुकान थी। वहीं चक्कर लगाने लगा। सहसा देखा काउण्टर पर एक पुस्तक रखी है—'देवदास'। मेरा मन पलट गया। दस आने में 'देवदास' खरीदी और जल्दी-जल्दी घर लौट आया।"

बरस दर बरस इकट्ठी होती गईं, ये तमाम किताबें। पर आप पूछ सकते हैं कि किताबें पढ़ने का शौक तो ठीक। किताबें इकट्ठी करने की सनक क्यों सवार हुई। उसका कारण भी बचपन का एक अनुभव है। इलाहाबाद भारत के प्रख्यात शिक्षा केन्द्रों में एक रहा है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा स्थापित पब्लिक लाइब्रेरी से लेकर महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित भारती भवन तक। विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी तथा अनेक कालेजों की लाइब्रेरी अलग। वहाँ हाइकोर्ट है, अत: वकीलों की निजी लाइब्रेरियाँ, अध्यापकों की निजी लाइब्रेरियाँ।

अपनी लाइब्रेरी वैसी कभी होगी यह तो स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था, पर अपने मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी हरि भवन। स्कूल से छुट्टी मिली कि मैं उसमें जाकर जम जाता था। पिता दिवंगत हो चुके थे, लाइब्रेरी का चंदा चुकाने का पैसा नहीं था, अत: वहीं बैठकर किताबें निकलवा कर पढ़ता रहता था। उन दिनों हिन्दी में विश्व साहित्य, विशेषकर उपन्यासों के खूब अनुवाद हो रहे थे। मुझे उन अनूदित उपन्यासों को पढ़ कर बड़ा सुख मिलता था। अपने छोटे से हरि भवन में खूब उपन्यास थे। वहीं परिचय हुआ बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की 'दुर्गेशनन्दिनी', 'कपाल कुण्डला' और 'आनन्द मठ' से। टॉलस्टाय की 'अन्ना करेनिना', विक्टर ह्यूगो का 'पेरिस का कुबड़ा' , 'हंचबैक ऑफ नात्रेदाम', गोर्की की 'मदर', अलेक्जेंण्डर कुप्रिन का 'गाड़ीवानों का कटरा' (यामा, दपिट) और सबसे मनोरंजक सर्वान्टीज़ का 'विचित्र वीर' (यानी डान क्विक्जोट) हिन्दी के ही माध्यम से सारी दुनिया के कथा पात्रों से मुलाकात करना कितना आकर्षक था।

लाइब्रेरी खुलते ही पहुँच जाता और जब लाइब्रेरियन शुक्ल जी कहते कि बच्चा अब उठो, पुस्तकालय बन्द करना है तब बड़ी अनिच्छा से उठता। जिस दिन कोई उपन्यास अधूरा छूट जाता, उस दिन मन में कसक होती कि काश इतने पैसे होते कि सदस्य बन कर किताब ईश्यू करा लाता या काश इस किताब को खरीद पाता तो घर में रखता। एक बार पढ़ता, दो बार पढ़ता, बार-बार पढ़ता, पर जानता था कि यह सपना ही रहेगा। भला कैसे पूरा हो पायेगा।

पिता के देहावसान के बाद तो आर्थिक संकट इतना बढ़ गया कि पूछिये मत। फीस जुटाना तक मुश्किल था। अपने शौक की किताबें खरीदना तो सम्भव ही नहीं था। एक ट्रस्ट से योग्य पर असहाय छात्रों को पाठ्य पुस्तकें खरीदने के लिए कुछ रुपए सत्र के आरम्भ में मिलते थे। उनसे प्रमुख पाठ्य पुस्तकें 'सेकेंड हैंड' खरीदता था, बाकी अपने सहपाठियों से लेकर पढ़ता और नोट्स बना लेता। उन दिनों परीक्षा के बाद छात्र अपनी पुरानी पाठ्य पुस्तकें आधे दाम में बेच देते और उसे कक्षा में आने वाले नये लेकिन विपन्न छात्र खरीद लेते। इसी तरह काम चलता।

लेकिन फिर भी मैंने जीवन की पहली साहित्यिक पुस्तक अपने पैसों से कैसे खरीदी, यह आज तक याद है।

उस साल इण्टरमीडियेट पास किया था। पुरानी पाठ्य पुस्तकें बेच कर बी०ए० की पाठ्य पुस्तकें लेने एक सेकेंड हैंड बुक शॉप पर गया। उस बार जाने कैसे पाठ्य पुस्तकें खरीद कर भी दो रुपए बच गये थे। सामने के सिनेमाघर में 'देवदास' लगा था न्यू थियेटर्स वाला। बहुत चर्चा थी उसकी। लेकिन मेरी माँ को सिनेमा देखना बिल्कुल नापसंद था। उसी से बच्चे बिगड़ते हैं। लेकिन उसके गाने सिनेमा गृह के बाहर बजते थे। उसमें सहगल का एक गाना था 'दुख के दिन अब बीतत नाहीं' उसे अक्सर गुनगुनाता रहता था। कभी-कभी गुनगुनाते हुए आँखों में आँसू आ जाते थे जाने क्यों। एक दिन माँ ने सुना। माँ का दिल तो आखिर माँ का दिल।

एक दिन बोलीं, 'दुख के दिन बीत जायेंगे बेटा, दिल इतना छोटा क्यों करता है धीरज से काम ले।' जब उन्हें मालूम हुआ कि यह तो फिल्म 'देवदास' का गाना है, तो सिनेमा की घोर विरोधी माँ ने कहा, 'अपना मन क्यों मारता है, जाकर पिक्चर देख आ। पैसे मैं दे दूँगी।' मैंने माँ को बताया कि 'किताबें बेच कर दो रुपए मेरे पास बचे हैं।' वे दो रुपए लेकर माँ की सहमति से फिल्म देखने गया। पहला शो छूटने में देर थी, पास में अपनी परिचित किताब की दुकान थी। वहीं चक्कर लगाने लगा। सहसा देखा काउण्टर पर एक पुस्तक रखी है—'देवदास', लेखक शरतचंद्र चट्टोपाध्याय दाम केवल एक रुपया।

मैंने पुस्तक उठा कर उलटी-पलटी तो पुस्तक विक्रेता बोला—'तुम विद्यार्थी हो। यहीं अपनी पुस्तकें बेचते हो। हमारे पुराने ग्राहक हो। तुमसे अपना कमीशन नहीं लूँगा। केवल दस आने में यह किताब दे दूँगा।' मेरा मन पलट गया। कौन देखे डेढ़ रुपए में पिक्चर? दस आने में 'देवदास' खरीदी। जल्दी-जल्दी घर लौट आया और दो रुपए में से बचे एक रुपया छह आना माँ के हाथ में रख दिया।

'अरे तू लौट कैसे आया? पिक्चर नहीं देखी?' माँ ने पूछा।

'नहीं माँ! फिल्म नहीं देखी, यह किताब ले आया।' माँ की आँखों में आँसू आ गये। खुशी के थे, या दुख के यह नहीं मालूम। वह मेरे अपने पैसों से खरीदी, मेरी अपनी निजी लाइब्रेरी की पहली किताब थी। **—'अमर उजाला' से साभार**

आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य

डॉ० विश्वनाथ प्रसाद

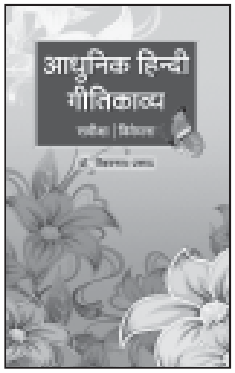

आकार डिमाई

पृष्ठ 354

सजिल्द : 978-81-7124-777-6 • रु० 400.00

इस पुस्तक के लेखन में लेखक ने दो बातों पर विशेष ध्यान दिया है। एक यह कि गीत का मूल स्वरूप क्या है? युग कितना ही बदला हो, किन्तु गीत के स्वरूप पर ध्यान दिया जाय। गीत एक सीमा तक बदला है, लेकिन उसकी भावात्मकता किसी न किसी सीमा तक गीत के साथ बँधी हुई है। दूसरे गीत बहुत फैलाव वाला नहीं होता है। गीत एक बात को उठाता है और उसी को कह कर या उस पर अपने भाव को प्रसारित करके रुक जाता है। कोई जरूरी नहीं है कि गीत वैयक्तिक अनुभूति को ही प्रगट करे। वह समाज, राष्ट्र आदि की बातों से भी जुड़ सकता है। आधुनिक काल के नवगीत में यह स्थिति दिखाई देती है।

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

नवगीत

नवगीत का जन्म किसी आन्दोलन के रूप में नहीं हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जीवन के हर क्षेत्र में स्वाभाविक बदलाव आया तो भावुकता और कल्पना के अतिरेक वाले गीत भी स्वाभाविक रूप से बदल गये। यह बदलाव किसी आन्दोलन के रूप में नहीं हुआ। कुछ गीतकारों में आरम्भ से ही एकदम नयापन था, जैसे ठाकुर प्रसाद सिंह। कुछ गीतकारों में नयी और पुरानी दोनों प्रवृत्तियाँ एक साथ रहीं, जैसे वीरेन्द्र मिश्र। डॉ. शम्भुनाथ सिंह में यह बदलाव क्रमशः आया। उनके आरम्भि गीतों में भावुकता और कल्पनाशीलता है। फिर जनोन्मुखी प्रवृत्ति, एकाकीपन और अस्तित्ववादी चेतना से गुजरते हुए वे नवगीत की तरफ आये। अन्त में प्रकृति की ओर लौटने की भावना उनके गीतों में दिखाई देती है। वे विकसनशील गीतकार हैं।

'नवगीत' शब्द का प्रयोग जाने-अनजाने राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने 'गीतांगिनी' की भूमिका में सन् 1958 में किया है। उनके अनुसार प्रगीत का पूरक बनकर नवगीत जन्म ले रहा था। राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने 'नवगीत' शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन वे नवगीत को पहचान नहीं पाये हैं। उन्होंने नवगीत के पाँच तत्व गिनाये हैं—जीवन दर्शन, आत्मनिष्ठा, व्यक्तित्वबोध, प्रीतितत्व और परिसंचय। जिसे आज नवगीत कहा जाता है, वह इन प्रवृत्तियों से अलग है। नवगीत को ठीक से न समझ पाने के कारण ही राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने सुमित्रानन्दन पन्त, दिनकर, अज्ञेय, जानकी बल्लभ शास्त्री, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, विद्यावती कोकिल, रमा सिंह, बच्चन, मुकुट बिहारी सरोज, राबिन शॉ पुष्प आदि को भी नवगीतकार मान लिया है। राजेन्द्र प्रसाद सिंह 'नवगीत' शब्द का प्रयोग करते हुए भी 'नवगीत' की पहचान नहीं कायम कर पाये हैं। अज्ञेय ने भी सप्तक में 'नयी कविता' का उल्लेख किया है, किन्तु वे नयी कविता की पहचान स्थिर नहीं कर पाये। उनकी कविताएँ भी नयी कविता के स्वरूप से भिन्न हैं। यह स्वाभाविक भी है। एकदम आरम्भ में ही किसी प्रवृत्ति अथवा विधा के लक्षण निर्धारित नहीं किये जा सकते हैं।

'गीत' और 'नवगीत' के विमर्श में महत्त्वपूर्ण भूमिका 'पाँच जोड़ बाँसुरी' की है। चन्द्रदेव सिंह द्वारा सम्पादित इस संकलन का प्रकाशन सन् 1969 में हुआ था। संपादक ने इस संकलन के नामकरण में ही ठाकुर प्रसाद सिंह को महत्त्व प्रदान किया है। 'बंशी और मादल' के प्रथम गीत की पहली ही पंक्ति है—'पाँच जोड़ बाँसुरी'। भूमिका में सम्पादक ने लिखा है कि इस संकलन का लक्ष्य पाँच पीढ़ियों का गीत लेखा उपस्थित करना है। निराला, बच्चन, ठाकुर प्रसाद सिंह, केदारनाथ सिंह और ओम प्रभाकर इस पाँच पीढ़ी के प्रतिनिधि गीतकार हैं। निराला के गीत छायावाद की कल्पना बहुलता से अलग हैं। बच्चन ने केवल भाषा की ही दृष्टि से गीत को जीवन के करीब लाने का प्रयास नहीं किया, बल्कि टेक, छन्द और अनुभूति की दृष्टि से भी गीतों को एक नयी दिशा की ओर उन्मुख किया। सम्पादक ने अज्ञेय को भी बच्चन की ही श्रेणी में रख लिया है। बच्चन के निजी हर्ष-विषाद को व्यक्त करने वाले गीत, बाद में लोक धुन और लोक चेतना की ओर मुड़े। अज्ञेय के गीतों में आरम्भ से ही लोक के भाव और लोक की धुन का अनुवर्तन करने की चेष्टा है। लेकिन ठाकुर प्रसाद सिंह के 'वंशी और मादल' में संथाल जीवन के पिछड़ेपन के साथ उसके उल्लास की जैसी अभिव्यक्ति की गई है, वह हिन्दी की गीत-यात्रा में उल्लेखनीय है। गीतों की टेक, अनुगूँज, नाद-ध्वनि, बिम्बों की योजना और प्रतीकात्मक संकेत इन गीतों को विशिष्ट बना देते हैं। नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, रामदरश मिश्र और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने लोक चेतना और लोकधुनों को लेकर गीतों की रचना की है, लेकिन ठाकुर प्रसाद सिंह विशिष्ट हैं।

'पाँच जोर बाँसुरी' में पहले छायावादी चेतना से प्रभावित तीन कवियों के गीत रखे गये हैं। दूसरे चरण में बच्चन से लेकर गिरजा कुमार माथुर तक नौ छायावादोत्तर गीतकार हैं। शम्भुनाथ सिंह को सम्पादक ने बच्चन, अज्ञेय और गिरजा कुमार माथुर के साथ रखा है। तीसरे चरण में ठाकुर प्रसाद सिंह से लेकर वीरेन्द्र मिश्र तक आठ रचनाकार हैं। चौथे चरण में केदारनाथ सिंह से लेकर उमाकान्त मालवीय तक चार गीतकार हैं। पाँचवें चरण में ओम प्रभाकर से लेकर नरेश सक्सेना तक आठ गीतकार हैं। बाद में पाँच विचारकों के पाँच निबन्ध भी हैं। इनमें गीत और नवगीत पर गम्भीर विचार किया गया है। यह संग्रह गीत और नवगीत के स्वरूप को अच्छी तरह से विश्लेषित करता है। गीतकारों के चयन में कुछ रचनाकारों के सम्बन्ध में प्रश्न अवश्य उठाये जा सकते हैं। बहुत बाद में सन् 1982, 1983 और 1984 में डॉ. शम्भुनाथ सिंह द्वारा क्रमशः नवगीत दशक भाग 1, 2 तथा 3 तैयार किया गया। इन तीन नवगीत संकलनों की अपेक्षा 'पाँच जोर बाँसुरी' ने नवगीत के स्वरूप और उनके रचनाकारों की पहचान को स्थिर करने में अधिक सफलता पाई है। डॉ. शम्भुनाथ सिंह ने पहले से ही कुछ तय लिया था, बाद में अपने उन विचारों के अनुकूल विवेचन किया। अपने को केन्द्र में रखने के लिए उन्होंने विवेचन किया और तर्क दिये। फिर भी 'नवगीत दशक' के तीन खण्डों का ऐतिहासिक महत्त्व है। इन संकलनों के ठीक पहले डॉ. विश्वनाथ प्रसाद ने 'नवगीत' पर एक विस्तृत समीक्षा 'धर्मयुग' में लिखी थी। इसके बाद नवगीत पर अनेक पुस्तकें आईं। लेकिन इनमें तटस्थ विवेचन न होकर, आग्रह और कहीं-कहीं तो दुराग्रह भी है।

नवगीत का जन्म एक नयेपन की तलाश में नहीं हुआ था। स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र नयेपन की तलाश कर रहा था तो एक प्रकार की विशेष राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में नवगीत का जन्म हुआ। इन्हीं परिस्थितियों में नयी कविता का भी जन्म हुआ। जैसे नयी कविता अपने से पहले की कविता से अलग थी, उसी प्रकार नवगीत भी अपने से पहले के गीतों से अलग था। .....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

समाजवादी बदलाव और साहित्य

—वीरेन्द्र यादव

समाजवादी पार्टी की नयी सरकार द्वारा उत्तर प्रदेश में सत्ता सम्भालने के बाद जनतंत्र के बन्द कपाटों के खुलने की जो शुरुआत हुई है, उससे साहित्य व संस्कृति के क्षेत्र में भी नयी अपेक्षाओं का होना स्वाभाविक ही है। विशेषकर तब, जब पिछली बसपा सरकार ने समूचे साहित्यिक-सांस्कृतिक तंत्र को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया हो। यह वास्तव में विडम्बनात्मक है कि जब साहित्य में दलित विमर्श ने अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज करायी हो, तब दलित नेतृत्व की सरकार ने साहित्य विरोधी भूमिका का निर्वाह किया। यह पहली ही बार हुआ कि उत्तर प्रदेश की एकमात्र सरकारी साहित्यिक संस्था उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान में कार्यकारी अध्यक्ष और निदेशक की नियुक्ति तक के लिए न्यायालय की शरण लेनी पड़ी। कमोबेश यही स्थिति उत्तर प्रदेश की अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं की भी रही।

सचमुच जिस उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान को कभी डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, अमृतलाल नागर, डॉ० शिवमंगल सिंह सुमन और डॉ० लक्ष्मीकान्त वर्मा सरीखी शीर्ष साहित्यिक प्रतिभाओं ने सृजित और कल्पित किया हो, उसकी यह दुर्गति शोचनीय है। संस्थान की स्वायत्तता का हनन करके घोषित पुरस्कारों तक का न दिया जाना इस दुर्दशा की निकृष्टतम परिणति है। ऐसा ही हाल भाषा संस्थान सहित अन्य संस्थाओं का भी रहा है। यह अपेक्षा स्वाभाविक ही है कि प्रदेश की नयी सरकार इन संस्थाओं को पुनर्जीवित ही नहीं करेगी बल्कि उन्हें स्वायत्तता प्रदान कर उनकी खोई हुई गरिमा भी वापस करेगी। यह इसलिए भी अपेक्षित है कि उत्तर प्रदेश देश की राजनीतिक अगुवाई करने के साथ-साथ साहित्य व संस्कृति के क्षेत्र में भी अग्रणी भूमिका का निर्वाह करता रहा है। कबीर, प्रेमचंद, निराला, राहुल सांकृत्यायन, महादेवी वर्मा, फिराक गोरखपुरी, सज्जाद जहीर यशपाल, अमृतलाल नागर, राही मासूम रजा से लेकर श्रीलाल शुक्ल तक जाने कितनी ही साहित्यिक विभूतियों की कर्मस्थली यह प्रदेश रहा है। साथ ही साथ यह प्रदेश साहित्य व राजनीति के बीच गहरे अन्तर्सम्बन्धों का भी गवाह रहा है। पं० जवाहरलाल नेहरू, आचार्य नरेंद्र देव, डॉ० सम्पूर्णानन्द और डॉ० राममनोहर लोहिया सरीखी शीर्ष राजनीतिक हस्तियों ने राजनीति व संस्कृति के बीच मजबूत कड़ी का कार्य किया है।

आजादी के बाद के वर्षों में जहाँ सत्ता पक्ष में रहते हुए नेहरू भारत की सांस्कृतिक नीतियों के कल्पनाकार रहे, वहीं प्रतिपक्ष में रहते हुए लोहिया देश के बौद्धिकों के लिए प्रेरणा एवं आकर्षण का केन्द्र रहे। डॉ० लोहिया के ही संरक्षत्व में 'जन' व 'मैनकाइंड' सरीखी पत्रिकाएँ समाजवादी बहसों का मंच बनीं। बौद्धिक संवाद को सहज सुलभ संवाद बनाने की ही प्रक्रिया में उन्होंने देश के सभी बड़े शहरों में कॉफी हाउस शृंखला की शुरुआत कराई और स्वयं इन हलचलों के सहभागी बने। दरअसल इसके पीछे डॉ० लोहिया का वह समग्र व्यक्तित्व था, जिसे बुद्धिजीवी, राजनेता या संस्कृति पुरुष के खानों में नहीं बाँटा जा सकता था। बाद के वर्षों में कठिनाई यह हुई कि लोहिया के कुछ अनुयायियों ने ही उन्हें समग्रता में न ग्रहण कर खण्ड-खण्ड में अपनाना शुरू किया। परिणाम यह हुआ कि किसी ने उनकी राम, कृष्ण और रामायण मेला सरीखी सांस्कृतिक अवधारणाओं का सहारा लेकर अपनी अंध-धार्मिकता का चोर दरवाजा खोल लिया तो किसी ने उनकी 'सिविल नाफरमानी' को अराजक शैली का पर्याय मान लिया। कुछ उत्साही साहित्यिकों ने तो लोहिया की 'व्यक्ति स्वातन्त्र' की चाहत को 'व्यक्तिवाद' में तब्दील करते हुए 'कलावादी' दुर्ग की पहरेदारी ही शुरू कर दी थी। परिणामत: जिन 'शूद्र, दलित, औरत, आदिवासी और धार्मिक अल्पसंख्यकों' के डॉ० लोहिया पक्षधर थे, वे ही इनके साहित्य में अनुपस्थित थे।

आज जब समाजावदी पार्टी के युवा नेतृत्व ने हर क्षेत्र में एक नयी कार्यशैली अपनाने का संकेत दिया है तो जरूरत है साहित्य व संस्कृति के क्षेत्र में भी एक नयी पहलकदमी की। इसके लिए आवश्यक है लोहिया के उस सामाजिक चिंतन को अपनाने की, जो 'स्त्रियों, शूद्रों, दलितों, आदिवासियों और मुसलमानों' को सामाजिक बन्धनों से मुक्त करना चाहता था। विचारणीय यह है कि जो हाशिए का समाज लोहिया के चिंतन का केन्द्र बिन्दु था और जिसने प्रदेश के वर्तमान राजनीतिक परिवर्तन में प्रभावी भूमिका का निर्वाह किया है, क्या सरकार की साहित्यिक सोच में वह भी कहीं अपनी उपस्थिति दर्ज करायेगा? अक्सर देखा गया है कि सरकारी साहित्यिक संस्थायें स्वयं को नगरीय व अभिजन सरोकारों तक सीमित रखकर व्यापक जनसमुदाय से अलग-थलग हो जाती हैं। जबकि सांस्कृतिक भूख-प्यास जितनी मेहनतकश समुदाय और ग्रामीण जन को है, उतनी नगरीय मध्यवर्ग को नहीं, क्योंकि वहाँ शिक्षा और मनोरंजन के अधुनातन साधन उपलब्ध हैं। जरूरत इस बात की है कि प्रदेश सरकार मेहनतकश ग्रामीण समुदाय की लोक संस्कृति, पारम्परिक गायन व नृत्य तथा अन्य विलुप्त होती लोक कलाओं के संरक्षण को भी अपनी सांस्कृतिक प्राथमिकताओं में शामिल करे।

यह सुखद है कि समाजवादी पार्टी साम्प्रदायिकता विरोध और सामाजिक न्याय की जिस अवधारणा को अपना प्रस्थान बिन्दु मानती है, वही व्यापक रूप से हिन्दी साहित्य की मुख्यधारा भी है। बाबरी मस्जिद ध्वंस और साम्प्रदायिकता की परिघटना को लेकर इस बीच लगभग दो दर्जन से अधिक उपन्यास और पचासों कहानियाँ हिन्दी में लिखी गयी हैं। इन रचनाओं में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के खतरे को ही नहीं चिह्नित किया गया है, बल्कि धर्मनिरपेक्षता के दरके माडेल को प्रश्नांकित किया गया है। बल्कि इससे भी आगे जाकर वहाँ धर्म की भूमिका ही सवालों के घेरे में है। वर्ण और जाति-आधारित भेदभाव के विरुद्ध हिन्दी लेखन में लम्बी परम्परा रही है। स्वयं सवर्ण लेखकों ने वर्ण और जाति से मुक्त होकर इस सामाजिक उत्पीड़न को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति प्रदान की है। साम्प्रदायिकता और सामाजिक न्याय के साथ-साथ इस बीच स्त्री विमर्श भी हिन्दी साहित्य की केन्द्रीय विषय वस्तु रहा है।

आज बाजार और उपभोक्ता संस्कृति सब कुछ लीलने की तैयारी में है। अच्छे मानवीय मूल्यों की तरह वह बेहतर व सामाजिक मूल्यों से प्रतिबद्ध साहित्य को भी दृश्य ओझल कर रहा है? पढ़ने-पढ़ाने व पुस्तकालय की संस्कृति को विकसित कर सरकारी संस्थान इस दिशा में जरूरी पहलकदमी कर सकते हैं। इसकी शुरुआत स्कूलों व कॉलेजों से ही होनी चाहिए। अच्छा साहित्य इंसान को बेहतर बनाने की पाठशाला होता है, अत: इसे उपलब्ध कराना समाजवादी मूल्यों की सरकार का अनिवार्य दायित्व है।

प्रेमचंद ने कहा था 'साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है।' सचमुच आज साहित्य को महज कवि सम्मेलनी मंच तक और साहित्यिक दायित्व को मात्र पुरस्कारों तक सीमित कर दिया गया है। उम्मीद की जानी चाहिये कि उत्तर प्रदेश सरकार का समाजवादी नेतृत्व साहित्यिक सरोकारों को डॉ० लोहिया की विचारधारा के अनुरूप नयी भूमिका प्रदान करने में सक्षम हो सकेगा।

—'जनसंदेश टाइम्स' से साभार

पृष्ठ 1 का शेष

करना होगा। इसमें लेखकों की सहायता भी ली जा सकती है। वक्त आ गया है कि हिन्दी की पुस्तकें अपनी उपस्थिति सशक्त और दृश्य ढंग से हमारे हिन्दी भाषी शहरों में दर्ज करायें। यह तभी हो सकता है जब उनके प्रकाशक मिलजुल कर कुछ करें कि वे सुलभ हो सकें। **—अशोक वाजपेयी**

('जनसत्ता' से साभार)

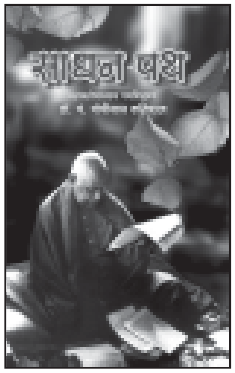

साधन-पथ

महामहोपाध्याय पद्मविभूषण डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज

यहाँ पथ का तात्पर्य आन्तरिक पथ है। बाह्य पथ यह संसार है। सम्पूर्ण संसार में से हमारी इस पृथ्वी का चक्रमण मनुष्य साध्य है। आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से इस विशाल पृथ्वी का प्रसार हम नाप लेते हैं। उसकी परिक्रमा अनायास कर लेते हैं। वह सब एक पथ का आश्रय लेने से होता है। परन्तु अन्तर्जगत् जो हमारे अस्तित्व में स्थिति है, वह भले ही इस साढ़े तीन हाथ की देह का जगत है, परन्तु वह अन्तर्जगत् आज भी हमारे लिए अज्ञात है।

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 156

सजिल्द : 978-81-7124-800-1 • रु० 200.00
अजिल्द : 978-81-7124-801-8 • रु० 90.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

साधना का प्रारूप

मनुष्य पंचकोष युक्त है। अन्नमय तथा प्राणमय कोषों का विकास तथा मनोमय कोष का पूर्वाभास मनुष्य के पूर्व की 84 लाख योनियों में पूर्ण हो जाता है किन्तु मनोमय का विकास मनुष्य-देह से ही प्रारम्भ होता है। मनुष्य-देह गठन के साथ ही मनोमय कोष का विकास सम्पन्न होता है। विवेकज्ञान-विचारबुद्धि-सदसद् विवेचन, मनुष्य-देह प्राप्ति के पूर्व नहीं होता। कर्तृत्वाभिमान की अभिव्यक्ति मनुष्य-देह की विशेषता है। मनुष्याकृति प्राप्त करके भी उसकी प्रवृत्ति में पशुभाव रह ही जाता है। तदनन्तर कभी सद्-असद् विवेक की अभिव्यक्ति होने पर नैतिक जीवन का सूत्रपात होता है। इस नैतिक जीव का महत्त्व ही पशु-जीवन से मनुष्य- जीवन के उत्कर्ष का परिचायक है। यदि भगवान् की कृपा मिलती है तब इस नैतिक जीवनयुक्त मनुष्य के आधार में ही पूर्णत्व के बीज निहित होते हैं। सर्वप्रथम मनुष्य का जीवन इस प्रकार से गठित होना चाहिए जिसमें उसका क्षुद्रत्व तथा संकोच-भाव दूर होकर व्यापक तथा उदारभाव विकसित हो सके तथा जिसके फल से मनुष्य एक ओर तो चित्तशुद्धि द्वारा अन्तर्मुख गति में अग्रसर हो सके तथा दूसरी ओर बाह्य सत्ता के साथ योगयुक्त होकर विश्व-कल्याण का व्रती बन सके। इसके लिए श्रीभगवान् ने निर्देश किया है कि निष्काम कर्मानुष्ठान मुख्य सोपान है। कर्त्तव्य-बोध में सुचारुरूप से कर्म सम्पादन द्वारा कर्मफल भगवान् को अर्पित करना चाहिये। कर्मफल में अनासक्त रहने से चित्तशुद्धि अनिवार्य है तथा कर्मानुष्ठान भी सुचारुरूप से सम्पन्न हो जाता है। यही है योगस्थ कर्म। कर्म स्वयं करना होगा, किन्तु उसके द्वारा प्राप्य फल समग्र विश्व में वितरित करना होगा। अपने किये कर्म के फल पर अधिकार न रखना इसकी ऊर्ध्वगति का प्रथम सोपान है। यहाँ सिद्धि-असिद्धि तुल्य रहती है। उसके प्रभाव से चित्त की मलिनता दूर हो जाती है। कर्मनिरूपक गुरु अथवा उपदेष्टा के द्वारा (अधीन) देशकाल तथा व्यक्तिगत प्रकृति के अनुसार उसकी विवेचना आवश्यक है।

इस प्रकार से दीर्घकाल कर्म में व्रती रहने से एक ओर बाह्यजगत् के साथ अपना योग अक्षुण्ण रहता है तथा दूसरी ओर निष्कामता के कारण चित्तशुद्धि होती है, अत: सहजभाव से ज्ञान का उदय होता है। यह ज्ञान शास्त्र से उपलब्ध ज्ञान नहीं है। यह स्व उपलब्धि जनित ज्ञान है। इस ज्ञानोदय से स्पष्ट विदित होता है कि मनुष्य चाहे जितना बड़ा कर्मी क्यों न हो, वह वास्तव में स्वयं कुछ नहीं करता। वह स्पष्ट अनुभव करता है कि त्रिगुणा प्रकृति के गुणसमूह द्वारा समस्त कर्म निष्पन्न होते हैं। वह स्वयं अहंकार से विमूढ़ होने के कारण स्वयं को अब तक (भ्रमवशात्) कर्त्ता मानता रहा है। यह अवस्था ज्ञान की सूचना देती है। जब अपने अहंकार का भान होता है तथा यह समझ में आता है कि अहंबोध से कार्य सम्पन्न नहीं होता, कर्म सम्पन्न होता है प्रकृति के गुण से। निष्क्रिय अकर्त्ता पुरुष केवल अभिमान करता है कि 'मैं कर्त्ता हूँ'। वास्तव में वह तभी उपलब्ध करता है, कि न तो वह कुछ करता है और न कुछ कर सकता है।

> यह 'साधन-पथ' तथा इसमें प्रतिपाद्य प्रत्येक विषय प्रत्यक्ष पर आधारित है। स्वानुभूत सत्य है। अत: शास्त्र है। इसलिए इसके अनुशीलन अध्ययन से शास्त्रकृपा प्राप्त हो जाती है। जो इस अनुभूति सागर में जितना गोता लगा सकेगा, वह उतने ही रत्न का, कृपारूपी मुक्ता का आहरण कर सकेगा। यह नि:संदिग्ध है।

हमारा प्रत्येक कर्म यज्ञ है। हमारा जो खाना-पीना है, वह भी प्राणाग्निहोत्र यज्ञ है। सब ही यज्ञ है, सब ही पूजा है। आत्मा ही परमात्मा है, परमात्मा ही आत्मा है। तभी जिसमें आत्मा का सन्तर्पण होता है, वही परमात्मा का तृप्तिसाधक है और उसकी जिससे तृप्ति होती है, वही है आत्मतृप्ति का उपकरण। दोनों में जो कल्पित विरोध तथा भेद परिलक्षित होता है, वह है अविद्यामूलक। जैसे स्वयं कुछ भोगार्थ ग्रहण करने पर वह बन्धन का कारण होता है। किन्तु यदि स्वयं न ग्रहण करके वह परमात्मा को अर्पित कर दिया जाय, तथा वह उनकी दृष्टि से पवित्र होकर साधक द्वारा गृहीत हो, हमारे पास प्रसादरूप से प्राप्त हो, तब उससे बन्धन तो होता ही नहीं, प्रत्युत् वह बन्धन मुक्ति का कारण हो जाता है। यही है कर्मगत कौशल। इस प्रकार मनुष्य कर्मस्तर से ज्ञानस्तर पर स्वयं उन्नीत होता है। इस ज्ञान के स्तर में कुछ समय संचरण करते-करते स्पष्ट ज्ञात होता है कि अचेतन गुण स्वयं संचारित होकर कर्म नहीं कर सकते। प्रकृति द्वारा ही सब कर्म निष्पन्न होते हैं।

इस प्रकार से मनुष्य के कर्म के स्तर से ज्ञान के स्तर में साधक स्वयं उन्नीत होने लगता है। इस स्तर में संचरण करते-करते उसे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि प्रकृति जड़ है। तभी भगवान् कहते हैं, ''मैं प्रकृति का संचालन करके जीव के सभी कर्मों का सम्पादन करता हूँ। प्रकृति की समस्त क्रिया में मैं ही अधिष्ठाता हूँ।''

इस प्रकार सभी कर्म के पृष्ठ भाग में परमात्मा का अङ्गुलिसंचालन ज्ञात हो जाता है। इसी समय से साधक में भक्ति का स्तर प्रारम्भ होने लगता है। जब तक परमात्मा का दर्शन नहीं हो जाता, तब तक भक्ति का उदय नहीं होता। तभी महाजनगण का कथन है कि प्रकृत भक्ति का उदय ज्ञान के पश्चात् होता है। सन्तान का जन्म हुए बिना उसके प्रति माँ का वात्सल्य जन्म नहीं लेता, वैसे ही भगवान् का साक्षात्कार न होने से उनके प्रति वास्तविक भक्ति का उदय सम्भव ही नहीं है। इस बार साधक कर्म के पश्चात् ज्ञान प्राप्त करके भक्ति का अधिकारी होता है। यह जो भगवत् स्वरूप है, इसका कोई दूरत्व नहीं है। क्योंकि परमात्मा तो आत्मारूप से अधिष्ठित रहकर आत्मा को उन-उन कार्य में माया शक्ति द्वारा नियोजित करते हैं। तभी भगवान् कहते हैं—

ईश्वर: सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥

इस बार मनुष्य अपने हृदयस्थ ईश्वर को देखकर समझता है कि ईश्वर माया के अधिष्ठाता हैं। वे प्रत्येक के हृदय में स्थित रहकर माया द्वारा प्रत्येक को उन-उन कर्मों में नियोजित करते हैं। ....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

ई-पुस्तकें बनाम मुद्रित पुस्तकें

तकनीक और प्रौद्योगिकी के नित बढ़ते हुए दौर में मुद्रित पुस्तकों के अप्रचलित हो जाने तथा ई-पुस्तकों के प्रमुख हो जाने की बातें इन दिनों जोर-शोर से की जाने लगी हैं। लेकिन लेखकों, विचारकों और विशेषज्ञों के विचार इस काल्पनिक प्रश्न को परे धकेल देते हैं। यह मुद्रित पुस्तकों के प्रति पाठकों की अदम्य लालसा ही है कि पुस्तक मेलों की संख्या पूर्वापेक्षा बढ़ती ही जा रही है। हर पुस्तक मेले में प्रकाशक भी बढ़ जाते हैं। इस वर्ष नई दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में ई-पुस्तकें और ई-प्रकाशन पर कई गोष्ठियों का आयोजन किया गया। बेशक, गोष्ठियों में ई-बुक्स में इजाफा होने तथा किताबों एवं पुस्तकालयों के डिजिटलीकरण की बातें कही गयीं और ई-बुक्स के क्षेत्र को 'अनन्त सम्भावनाओं वाला क्षेत्र' बताया गया, किन्तु मुद्रित पुस्तकों का जलवा कायम रहा।

बाल मंडप में स्कूली बच्चों के बीच जब 'क्या ई-बुक्स किताबों को बेदखल कर सकती हैं?' विषय पर परिचर्चा हुई तो एक छात्रा का कथन सबको स्पंदित कर गया कि—मुद्रित पुस्तकों से हमारी भावनाएँ जुड़ी होती हैं। एक विद्वान के इस विचार को यहाँ रखना प्रासंगिक लगता है जिसमें उन्होंने कहा था—ई-बुक्स से सूचनाएँ और जानकारियाँ तो प्राप्त की जा सकती हैं पर ज्ञान तो पुस्तकों से ही मिल सकता है। हिन्दी की सुपरिचित लेखिका चित्रा मुद्गल का कथन कितना मौजूं लगता है—भूमण्डलीकरण की असली जन्मदाता पुस्तकें हैं। ....पुस्तकें मनुष्य के लिए पंख हैं। वही पंख उसे अपने देश और समाज की सरहदें उलांघ विश्व के अनेक देश की यात्रा पर ले जाते हैं।

खासी भाषा

यूनेस्को ने मेघालय की खासी भाषा को विलुप्त होने वाली भाषा की अपनी सूची से बाहर कर दिया है। इसका मतलब यह है कि खासी अब सुरक्षित भाषा हो गई है। यूनेस्को इसकी वजह इस भाषा को मिलने वाले सरकारी संरक्षण को मानता है। उसका कहना है कि मेघालय में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, रेडियो, टेलीविजन और धर्म आदि में इस भाषा का इस्तेमाल किया जा रहा है, जिसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। खासी भाषा को खसिया, कोसयाह या क्यी नाम से भी पुकारते हैं। यह भाषा मुख्यत: मेघालय में खासी और जैंतिया पहाड़ियों के आसपास के रहने वाले लगभग नौ लाख लोगों द्वारा बोली जाती है। इसके अतिरिक्त मेघालय से सटे असम के पहाड़ी जिलों और भारत-बांग्लादेश सीमा के नजदीक भी यह भाषा बोली जाती है।

प्राचीन काल में इस भाषा की अपनी लिपि नहीं थी। वर्ष 1813 से 1838 के बीच बैपटिस्ट मिशनरी सोसाइटी के संस्थापक विलियम कैरी ने इसे असमी लिपि में लिखने का प्रयास किया, तो 1841 में थॉमस जॉन्स ने इसे लैटिन लिपि में लिखना शुरू किया। आज खासी भाषा में कई किताबें लिखी जा रही हैं, तो कई समाचार पत्र भी छप रहे हैं।

पश्चिम बंगाल में पाठ्यक्रम से गायब होगा मार्क्स

कोलकाता। स्कूल शिक्षा पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा नियुक्त समिति ने 11वीं और 12वीं कक्षा के इतिहास के पाठ्यक्रम से मार्क्सवाद को कम करने और इसमें वैश्वीकरण, दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला का आन्दोलन और समसामयिक महिला आन्दोलनों को शामिल करने का फैसला किया है।

ममता ने समिति का गठन पिछले साल मई में राज्य की सत्ता सम्भालने के बाद किया था। पाठ्यक्रम पुनरावलोकन समिति के प्रमुख अविक मजूमदार ने बताया कि, हमने 11वीं और 12वीं कक्षा के इतिहास के पाठ्यक्रम की पुनर्संरचना का फैसला लिया है। यदि कोई इतिहास की मौजूदा किताबें पढ़ता है या पढ़ती है तो उसे पता चलेगा कि दुनिया में सिर्फ तीन देश हैं—भारत, इंग्लैण्ड और सोवियत रूस। लेकिन हमने छात्रों के लिए निष्पक्ष एवं बहुलतावादी इहिास प्रस्तुत करने का फैसला किया है।

अब नहीं छपेगी इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका

वर्षों से जानकरी का भण्डार मानी जाने वाली 'इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' का प्रकाशन स्थगित कर दिया गया है। अब इसके मुद्रित संस्करण की बजाय इंटरनेट पर संस्करण उपलब्ध होंगे। कम्पनी के अध्यक्ष श्री जॉर्ड कॉज का मानना है कि प्रिण्ट से डिजिटल मीडिया की तरफ बढ़ने से इसके अधिक प्रसार की सम्भावनाएँ होंगी।

इंटरनेट से जुड़ेंगे देश के हजारों पुस्तकालय

विगत दिनों दिल्ली में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के शताब्दी समारोह में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा कि पाठकों की किताबों और सूचना तक पहुँच सुलभ कराने के उद्देश्य से भारत करीब नौ हजार पुस्तकालयों का आधुनिकीकरण करेगा और उन्हें इंटरनेट के माध्यम से जोड़ा जायेगा। नेशनल मिशन फॉर लायब्रेरीज के अन्तर्गत इस महत्त्वाकांक्षी योजना का उद्देश्य अगले तीन साल में देश के शहरों, कस्बों और गाँवों के पुस्तकालयों से पाठकों को जोड़ना है। गाँव के सरकारी पुस्तकालय में बैठे किसी युवा पाठक की दुनिया भर की किताबों तथा सूचना तक पहुँच होनी चाहिये। इस अभियान के अन्तर्गत पुस्तकालयों की राष्ट्रीय गणना करायी जायेगी। पठन संसाधनों के ढाँचे के उन्नयन की दिशा में काम किया जायेगा और देश भर में किताबों के नेटवर्क का संवर्द्धन तथा आधुनिकीकरण किया जायेगा।

प्रधानमंत्री का मानना था कि इस अभियान को केवल सरकारी प्रयासों के जरिए सफलता नहीं मिल सकती, बल्कि इसके लिए निजी क्षेत्र और गैरसरकारी संगठनों से उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग भी किया जायेगा। यह अभियान देश में सरकारी पुस्तकालय प्रणाली के सुधार पर ध्यान केंद्रित करेगा तथा उन राज्यों पर खास ध्यान दिया जायेगा जो पुस्तकालयों के विकास के लिहाज से पिछड़े हैं।

जापान में हिन्दी अध्यापन

विगत दिनों जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केन्द्र की ओर से आयोजित एक परिचर्चा में भाग लेने आये जापान के ओसाका विश्वविद्यालय के मानद प्रोफेसर तोमियो मिजोकामी ने कहा कि दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और ओसाका विश्वविद्यालय के बीच कोई करार नहीं होने के बावजूद दोनों विश्वविद्यालयों के अकादमिक सम्बन्ध बहुत प्रगाढ़ हैं। उन्होंने जापान में आज के हिन्दी अध्ययन-अध्यापन पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि जब वे विद्यार्थी थे, वहाँ हिन्दी अध्ययन उतना आसान नहीं था। आज भारत में जापानी अध्ययन की तुलना में जापान में हिन्दी अध्ययन काफी आगे है।

जन नाट्य मंच अब नयी जगह पर

नई दिल्ली। जन नाट्य मंच अब अपनी तमाम गतिविधियों का संचालन शादी खामपुर स्थित चार मंजिला इमारत से करेगा। जन नाट्य मंच ने विगत 5 अप्रैल को अपने स्टूडियो थिएटर, दफ्तर और रिहर्सल स्थल के उद्घाटन के साथ इसकी शुरुआत की।

जन नाट्य मंच के खुले रिहर्सल स्थल का उद्घाटन सुपरिचित संगीतकार काजल घोष ने किया। उन्होंने उद्घाटन के बाद 'मोटेराम का सत्याग्रह' नाटक का गीत गाया। स्टूडियो थिएटर का उद्घाटन शुभा मुद्गल ने किया, जिन्होंने अपने गायन से इस अवसर को यादगार बना दिया। कार्यक्रम का संचालन कर रही जन नाट्य मंच की सचिव मलयश्री हाशमी ने सफदर हाशमी का सपना साकार होने पर जन नाट्य मंच की ओर से खुशी का इजहार किया।

आकार डिमाई

पृष्ठ 108

सजिल्द : 978-81-7124-766-0 • रु० 150.00
अजिल्द : 978-81-7124-769-1 • रु० 90.00

हिन्दू षड्दर्शन

स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती

यह ग्रन्थ इस प्रसंग की सूक्ष्म विवेचना न होकर इसका दिशानिर्देश-मात्र है, जो सूत्ररूप से ग्रथित है। साथ ही षड्दर्शन का साररूप है। जो विशाल कलेवरयुक्त गूढ़ तत्त्व समावृत षड्दर्शन का समग्र अध्ययन नहीं कर सकते, तथापि इस विषय के प्रति जिज्ञासु हैं, उनके लिए यह ग्रन्थ एक पथ-प्रदीप के समान है।

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

मूल विषय में मेल रहने पर भी प्रभाकर तथा कुमारिल के मत में अनेक 'अमेल' भी है। जैसे प्रमाण। वृत्तिकार तथा कुमारिल छः प्रमाण मानते हैं—प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान-अर्थापत्ति-अभाव (अनुपलब्धि) एवं शब्द। प्रभाकर अभाव को अलग से प्रमाण नहीं मानते। 'भूतल पर घट नहीं है' यह भूतल को तो प्रत्यक्ष देखता हूँ, आगे घट का भी प्रत्यक्ष करता हूँ। पहले देखा गया घट अब भूतल पर नहीं है। इसलिए केवल उसका नाम ही है। इस प्रकार की 'जिरह' उठाकर प्रभाकर अभाव को अलग से प्रमाण नहीं मानते। अर्थापत्ति, जैसे कोई जीवित व्यक्ति घर में नहीं है, तब वह निश्चय ही बाहर गया है। देवदत्त को दिन में भोजन करते नहीं देखा, फिर भी वह हृष्टपुष्ट है। अतः वह रात को भोजन करता है। इत्यादि। न्याय तथा सांख्य भी इसे 'अलाहदा' प्रमाण नहीं मानते। यह अनुमान में आता है। नैयायिक केवल व्यतिरेकी की श्रेणी में इसे रखते हैं। मीमांसक व्यतिरेक में दृष्टान्तबल से आस्था-स्थापन नहीं करते। अथच दृष्टान्त-बल से ही असल अनुमान होता है। वेदान्त परिभाषा अन्वयी के अतिरिक्त अन्य अनुमान को नहीं मानती। व्यतिरेकी अनुमान उसके मत से अर्थापत्ति के अन्तर्गत पड़ जाता है। नैयायिक कहते हैं—अर्थापत्ति ही व्यतिरेकी के अन्तर्गत है। इन सबको लेकर तर्क का अन्त नहीं है। मीमांसकों को उपमान अस्वीकृत है। नैयायिकों को भी! किन्तु मीमांसकों की उपमान की धारणा अन्य प्रकार है। ''ग्राम में एक गाय देखी। उसके समान एक जन्तु इसी वन में देखा।'' इस प्रकार सादृश्य का स्मरण होता है। ग्राम की गाय इस समय सामने नहीं है। वनवाला (गाय के समान) पशु सामने है। उस अनुपस्थित जन्तु (गाय) के साथ उपस्थित जन्तु के सादृश्य का ज्ञान हो रहा है। इस प्रकार के सादृश्य का ज्ञान ही उपमिति है। गवय नाम हमारा जाना-सुना नहीं है। किसी ने मुझसे कहा भी नहीं है कि वन में गाय के समान गवय नामक जानवर है। अर्थात् गवय शब्द का जो वाच्य है उसे जानने की उपमिति नहीं हो सकी है। किन्तु नैयायिक यही कहते हैं। पहले देखी किसी वस्तु के साथ वर्त्तमान में देखी वस्तु का ज्ञान जिससे होता है, वही मीमांसकों की उपमिति है। प्रत्येक के सादृश्य को एक स्वतन्त्र पदार्थ कहें, इसके लिए कुमारिल राजी नहीं थे। अर्थापत्ति को लेकर भी गुरुमत तथा भट्टमत के बीच कुछ विशेष है। गुरुमत में संशय है कि नहीं, इसे लेकर तर्क है। यह सब बात यहीं रहे।

वेदोक्त कर्म (यागादि में) में प्रेरणा तथा विधि जो वाक्य दे उसका प्रामाण्य प्रत्यक्ष प्रभृति अन्य किसी उपाय से नहीं किया जा सकता। याग करने से जो स्वर्ग-लाभ होने का 'अपूर्व' होगा उस पर मैं किसलिए विश्वास करूँ? स्वर्ग-लाभ कराने के सामर्थ्यरूप जो 'अपूर्व' है, वह तो प्रत्यक्ष नहीं है। अतएव प्रत्यक्ष आश्रय करके जो अनुमानादि होता है, उस अपूर्व सम्बन्ध में हमारा स्थिर विश्वास नहीं हो पा रहा है। अतएव वेदरूप जो वाक्यसमूह है, उसे छोड़कर हमारे विश्वास की तथा कर्म प्रेरणा की अन्य भित्ति नहीं है। साधारण पुरुष का उच्चारित वाक्य इन्द्रियग्राह्य विषय में अवश्य प्रमाण हो सकता है, किन्तु प्रभाकर के मतानुसार वाक्य होने से वह प्रमाण नहीं है। किसी व्यक्ति को हम विश्वस्त मानते हैं, तभी उसका वाक्य प्रमाण है। वाक्यरूप प्रमाण केवल वेदवाक्य है और इन्होंने अतीन्द्रिय अपूर्वादि विषय में एकमात्र वेद-वाक्य ही प्रामाण्य माना है। कुमारिल ने सीधे-सीधे पौरुषेय एवं अपौरुषेय रूप दो शब्द प्रमाण को माना है। वेद अपौरुषेय है, अतः पुरुष के दोष-गुण से उसके प्रामाण्य की हानि-वृद्धि नहीं होती। उसका प्रामाण्य स्वतः एवं स्थिर है। वेद के भीतर व्यर्थ कथा, अन्य कथा, विरुद्ध कथा, लोगों का नाम, इतिहास आदि होने से वेद नित्य नहीं है। प्रमाण नहीं है, ऐसी आपत्ति का उत्तर मीमांसा सूत्र (1/1/24-27) में दिया गया है।

शब्द के साथ उसके अर्थ अथवा वाच्य का नित्य सम्बन्ध है। स्वाभाविक (औत्पत्तिक) होने से नित्य है। ''इस नाम से यह ज्ञात होगा'' ऐसा किसी ने ठीक करके नहीं दिया है। ईश्वर ने भी नहीं। राम अथवा हरि से लोकविशेष का द्योतन होता है। यह दृष्टान्त देकर और-और शब्द तथा अर्थ का सम्पर्क समझने से कार्य नहीं होगा। शब्द तथा जिन-जिन वर्ण को लेकर शब्द तैयार हुआ है, वह भी नित्य है। मीमांसा सूत्र (1/1/6-23) में यह विचार अंकित है। न्याय वाले तथा बौद्ध उसे अवश्य अनित्य कहते हैं। शब्द और वर्ण हैं, तब भी अभिघात, प्रयत्न, इन्द्रिय सन्निकर्ष इत्यादि अभिव्यञ्जक रहने से वे व्यक्त होते हैं। अन्यथा अव्यक्त रह जाते हैं। अव्यक्त रहने पर हम समझते हैं कि नहीं हैं। तदनन्तर स्मरण रखना होगा कि विधि देने के ही लिए शब्द हैं। मीमांसा ने शब्द के अर्थ का Pragmatic view लिया है। 'गाय लाओ' कहने से 'गाय' शब्द का स्वतन्त्र भावेन भान है अथवा नहीं है, इसमें प्रभाकर से कुमारिल का मतभेद लक्षित होता है। (आन्विताभिधान और अभिहितान्वय—अन्वित है तभी अभिधान Significance होता है और जिसका अपना अभिधान है, वह वाक्य में अन्वित होता है)। वैयाकरण के 'स्फोट' को ये लोग नहीं मानते। शब्द का वाच्य जाति है, व्यक्ति नहीं है। प्राचीन न्याय में जाति-व्यक्ति-आकृति ये तीन हैं।

अनुमान और प्रत्यक्ष को लेकर मीमांसा ने कुछ स्वतन्त्र सिद्धान्त गढ़ लिया है। ज्ञान स्वतः प्रमाण है कि नहीं, इसे लेकर भी नैयायिकों में मतविभिन्नता है। ज्ञान मात्र ही ज्ञान के हिसाब से प्रमाण है; प्रमाण उसका स्वभाव है। समय-समय पर जो भूल होती है, वह दोषरूप हेतु द्वारा उस ज्ञान की कारण सामग्री के दुष्ट हो जाने से होती है। इन सबको लेकर विस्तृत विचार किया गया है। ज्ञान हुआ, इसे कैसे जान लिया जाये? ज्ञान स्वप्रकाश है, अथवा नहीं? इसे लेकर अनेक बातें! प्रभाकर संवित् अथवा चैतन्य को स्वप्रकाश कहते हैं। कुमारिल का अन्य मत है। घट को देखा है। यहाँ घटरूपी बाहरी वस्तु प्रत्यक्ष का विषय है। घट ज्ञान अथवा घट बुद्धि नहीं है। अर्थ ही विषय-बुद्धि (Mental State अथवा Representation) नहीं है। घट है वस्तु की एक मानसिक वृत्ति (बुद्धि), जो हमारी हो रही है। उसे मीमांसा के मत से हमें अनुमान करके जानना पड़ता है। बाह्य द्रव्यों को साक्षात् सम्बन्ध में हम ग्रहण करते हैं।....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

सम्मानित हुईं काशी की पाँच विभूतियाँ

ज्ञान-प्रवाह ने अपने 15वें स्थापना दिवस पर विगत 1 अप्रैल को काशी की पाँच विभूतियों—वेद परम्परा के मूर्धन्य विद्वान कृष्णमूर्ति घनपाठी, काशी के विविध आयामों के विश्वकोष डॉ० भानुशंकर मेहता, चित्रकला क्षेत्र के विश्वविख्यात ज्ञाता प्रो० आनन्द कृष्ण, संगीत कला की सर्वश्रुत आचार्या गिरिजा देवी तथा अत्यल्प समय में धातु शिल्प की एक विशेष मधुच्छिष्ट विधान से मनोहर कलाकृतियों के निर्माता काशीनाथ जी को सम्मानित किया।

समारोह के मुख्य अतिथि प्रधानमन्त्री की अर्थशास्त्रीय सलाहकार समिति के अध्यक्ष डॉ० सी० रंगराजन ने काशी के इन ख्यातिनाम हस्ताक्षरों को स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया।

रिजर्व बैंक के अवकाश प्राप्त गवर्नर व आन्ध्र प्रदेश के पूर्व राज्यपाल डॉ० रंगराजन ने समारोह की विशिष्ट अतिथि श्रीमती हरिप्रिया रंगराजन के साथ मिलकर डॉ० पी०एन० जोशी व डॉ० ए०एल० श्रीवास्तव के ग्रन्थ 'सहस्रशिल्प दल' का प्रथम भाग, प्रो० के०के० थपलियाल द्वारा लिखित पुस्तक 'अशोक : द किंग एण्ड द मैन' एवं श्री जयव्रतो चटर्जी द्वारा सम्पादित 'ज्ञान प्रवाह : 15 ग्लोरियस इयर्स' नामक तीन प्रकाशनों का विमोचन भी किया।

इस अवसर पर शान्तिनिकेतन से आये भारतीय चित्रकला के प्रसिद्ध विद्वान डॉ० अशोक दास ने 'मुगल चित्रकला में रामायण' विषय पर पारदर्शिकाओं के साथ व्याख्यान दिया, उन्होंने कहा कि रामायण एवं महाभारत के फारसी अनुवाद के लिए अकबर के किताबखाने में फारसी विद्वानों के साथ काशी से निमन्त्रित पण्डित भी बैठकर कार्य करते थे। कार्यक्रम के दौरान ज्ञान प्रवाह की गत 15 वर्षों की सफल यात्रा को स्पष्ट करने के लिए इस प्रसंग पर करीब 300 चित्रों की एक प्रदर्शनी भी लगायी गयी। कार्यक्रम में संस्था के अध्यक्ष सुरेश नेवटिया ने आगतों का स्वागत किया। संस्थान की मानद निदेशिका प्रो० कमल गिरि ने संचालन किया। प्रबन्धन्यासी विमला पोद्दार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

भोजपुरी हमारी माँ है : हुशिला देवी

वाराणसी। विगत 9 अप्रैल को मॉरिशस की सुप्रसिद्ध लोक कलाकार हुशिला देवी रिसौल के सम्मान में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भोजपुरी अध्ययन केन्द्र में आयोजित सम्मान समारोह में हुशिला देवी का माल्यार्पण एवं अंगवस्त्रम् द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भोजपुरी हमारी माँ है। भोजपुरी को मॉरिशस में राजभाषा का दर्जा प्राप्त हो चुका है। साथ ही प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक में भोजपुरी का अध्ययन हो रहा है। समारोह का आयोजन केन्द्र के समन्वयक प्रो० सदानन्द शाही ने किया था।

बाबू राम त्रिपाठी पुरस्कृत

विगत दिनों वर्ष 2011 का बाणभट्ट पुरस्कार हिन्दी साहित्य के विद्वान लेखक बाबूराम त्रिपाठी को वाराणसी में आयोजित कार्यक्रम में अखिल भारतीय विद्वत् परिषद की ओर से परिषद के अध्यक्ष जयशंकरलाल त्रिपाठी ने प्रदान किया। श्री त्रिपाठी को यह पुरस्कार अनुराग प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित उनके आत्मकथात्मक उपन्यास 'तथागत' के लिए दिया गया है। उल्लेखनीय है कि इस उपन्यास की भूमिका केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, वाराणसी के उपकुलपति श्री गेशे नवांग सामतेन ने लिखी है। सम्मान समारोह में अखिल भारतीय विद्वत् परिषद के सचिव श्री कामेश्वर उपाध्याय भी उपस्थित थे।

सप्तदश भाऊराव देवरस स्मृति सेवा-सम्मान

लखनऊ में विगत दिनों आयोजित सप्तदश भाऊराव देवरस स्मृति सेवा-सम्मान समारोह में स्वामी अभयानन्द सरस्वती महाराज ने कहा कि सेवा के दो स्वरूप हैं—तनजा और वित्तजा। शरीर से किया गया सेवाकार्य तनजा है और दान देकर वित्तजा सेवा की जा सकती है।

सम्मान-समारोह के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री राजनाथ सिंह ने अपने उद्बोधन में समाजसत्ता एवं धर्मसत्ता का नियन्त्रण कम होने के लिए राजसत्ता को जिम्मेदार बताया। उन्होंने कहा कि बच्चों में मौलिक चिन्तन का अभाव हो रहा है क्योंकि बच्चों की शिक्षा मातृभाषा में नहीं हो रही है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह डॉ० कृष्णगोपाल थे।

सम्मान समारोह में वरदान सेवा संस्थान के प्रतिनिधि डॉ० सुरेश कुमार संगल तथा मेघालय शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री रिनोमो सुंगो को न्यास की ओर से 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये), अंगवस्त्र, श्रीफल एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ० विजय कर्ण थे।

देवीशंकर अवस्थी सम्मान समारोह

विगत 5 अप्रैल को साहित्य अकादमी सभागार में देवीशंकर अवस्थी सम्मान समारोह के अन्तर्गत वरिष्ठ आलोचक प्रो० नित्यानन्द तिवारी ने जितेन्द्र श्रीवास्तव को उनकी पुस्तक 'आलोचना का मानुष-मर्म' के लिए 16वाँ देवीशंकर अवस्थी सम्मान प्रदान किया। यह सम्मान स्वर्गीय देवीशंकर अवस्थी की स्मृति में हर वर्ष किसी युवा आलोचक को दिया जाता है। सम्मान स्वरूप पुरस्कृत आलोचक को 11 हजार रुपए की राशि, स्मृति चिह्न और प्रशस्ति-पत्र दिया गया।

इस अवसर पर आयोजित विचार गोष्ठी में प्रो० तिवारी ने कहा कि भारतीय संस्कृति हमें सिखाती है कि हम जाति, धर्म, और क्षेत्र आदि का अतिक्रमण करके भी भारतीय हो सकते हैं और हैं। विभिन्न धर्मों के लोग साथ-साथ जीते हुए ऐसी विधियों का विकास कर लेते हैं कि वे साथ-साथ रह सकें।

राधावल्लभ त्रिपाठी ने आलोचना के पश्चिमी मानकों की जगह अपने मानकों के इस्तेमाल पर जोर देते हुए कहा कि पश्चिम जहाँ पटाक्षेप कर कहता है इससे आगे कुछ नहीं, भारतीयता और भारतीय दृष्टि उसके पार जाकर भी सोचती और बताती है। यह दृष्टि आलोचना में आनी चाहिये। उन्होंने यह भी माना कि भारतीय आलोचना की सम्भावनाएँ अनन्त हैं।

पुरस्कृत युवा आलोचक जितेन्द्र श्रीवास्तव ने अपने वक्तव्य में कहा कि आलोचना कठिन अनुशासन है और मेरे लिए आलोचना विद्वता के प्रदर्शन की नहीं, उसके सृजन की पाठशाला है।

वाग्मणि सम्मान

कमल कुमार को इस वर्ष का वाग्मणि सम्मान राजस्थान लेखिका संस्थान ने जयपुर में दिया। इस अवसर पर राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० के०एल० कमल और प्रसिद्ध लेखक लेखिकाएँ उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि इसी वर्ष कमल कुमार को हिन्दी संस्थान महाराष्ट्र ने भी उनके साहित्यिक अवदान के लिए साहित्य रत्न से सम्मानित किया है।

दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार

प्रख्यात कन्नड़ उपन्यासकार एस०एल० भैरप्पा को साहित्य के और बॉलीवुड अभिनेत्री माधुरी दीक्षित को हिन्दी सिनेमा के क्षेत्र में उनके अहम योगदान के लिए दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार प्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर के पिता दीनानाथ मंगेशकर की याद में दिया जाता है।

सम्मान समारोह

गोरखपुर। विगत दिनों सुधा संस्मृति संस्थान के तत्त्वावधान में चित्रगुप्त मन्दिर के डॉ० रामविलास शर्मा सभागार में उन्हीं की स्मृति में आयोजित सम्मान समारोह में सर्वप्रथम हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार व आलोचक प्रो० रामदेव शुक्ल को वर्धा से आए आलोचक डॉ० शम्भू गुप्त ने अंगवस्त्र, स्मृति-चिह्न व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इसी क्रम में उर्दू के आलोचक व भाषा वैज्ञानिक प्रो० शम्सुर्रहमान फारुकी को दिल्ली के डॉ० तेज सिंह व डॉ० के०सी० लाल ने सम्मानित किया।

पाँच भारतीय सम्मानित

अमेरिका में भारतीय मूल के लोगों द्वारा गठित एक वैश्विक संगठन द्वारा भारतीय मूल के पाँच अमेरिकी नागरिकों को उनकी उपलब्धियों

और योगदान के लिए सम्मानित किया गया। सम्मानित किये जाने वाले लोगों में विवेक मारू (सामाजिक उद्यमी), फाकिर जैन (व्यावहारिक विज्ञान एवं अनुसंधान), चंद्र प्रसाद (कला एवं ज्ञान), नीना सिंह (सामुदायिक सेवा) और मलिका भंडारकर (युवा सम्मान) शामिल हैं।

कथाकार शिवमूर्ति को 'लमही सम्मान'

लखनऊ। वरिष्ठ कथाकार शिवमूर्ति को तीसरे 'लमही सम्मान' से विभूषित किया जायेगा। यह समारोह उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की पुण्यतिथि पर आठ अक्टूबर को आयोजित किया जायेगा। शिवमूर्ति के नाम का चयन लेखिका चित्रा मुद्गल की अध्यक्षता वाली समिति ने किया है। जिसमें फिल्मकार डॉ० चंद्रप्रकाश द्विवेदी, समालोचक सुशील सिद्धार्थ व लमही पत्रिका के प्रधान सम्पादक विजय राय शामल हैं। इससे पहले लेखिका ममता कालिया और कहानीकार स्व० साजिद रशीद को इस सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। समारोह में शिवमूर्ति पर केन्द्रित लमही-विशेषांक का विमोचन भी किया जायेगा।

वेद अग्रवाल सम्मान मनोज मनु को

नई दिल्ली। स्वर्गीय वेद अग्रवाल की स्मृति में हर वर्ष दिया जाने वाला पत्रकारिता-साहित्य सम्मान इस बार युवा पत्रकार मनोज मनु को दिया जायेगा। मनु सहारा समय नेशनल और सहारा समय मध्य प्रदेश/छत्तीसगढ़ के चैनल प्रमुख हैं। पिछले साल यह सम्मान एनडीटीवी के रवीश कुमार को दिया गया था। उत्तर प्रदेशीय महिला मंच की सम्मान समिति के निर्णय के बाद इस पुरस्कार की घोषणा की गई। मंच की अध्यक्ष डॉ० अर्चना जैन और महासचिव ऋचा जोशी ने 6 अप्रैल को इसकी आधिकारिक घोषणा की। संस्था के 27वें स्थापना दिवस समारोह पर यह सम्मान दिया जाएगा।

राजेंद्र उपाध्याय को पुरस्कार

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि-गद्यकार राजेंद्र उपाध्याय को उनके यात्रा-वृत्तांत 'वहां मलय सागर तक' के लिए इस वर्ष का भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय का राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार दिया गया है। इस यात्रा-वृत्तांत में देश-विदेश की अनेक यात्राओं की रोचक चहलकदमी शब्दांकित की गयी है।

मदनमोहन परिहार सम्मानित

जोधपुर की संस्था 'साहित्य संगम' के सचिव एवं कवि-लेखक मदनमोहन परिहार को पिछले दिनों राजस्थान साहित्य अकादेमी की ओर से 'अमृत सम्मान' से अलंकृत किया गया। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने श्री परिहार को उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए 11,000/- रुपए की राशि के साथ सम्मानित किया। प्रदेश के तेरह अन्य साहित्यकारों को भी 'अमृत सम्मान' प्रदान किया गया।

साहित्यकार राजेन्द्र यादव का लोक सम्मान

अग्रज एवं वरिष्ठ कथाकार कृष्णा सोबती के शब्दों में हिन्दी कबीला वरिष्ठ कथाकार और 'हंस' के सम्पादक राजेन्द्र यादव के 'हजूर में हाजिर' था। दिल्ली में विगत दिनों यादव जी के लोक सम्मान के अन्तर्गत सुश्री सोबती और प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह ने शॉल ओढ़ाकर उन्हें सम्मानित किया। हिन्दी के तमाम दूसरे सम्मानों से अलग यह किसी लेखक का अपनी तरह का सम्मान इसलिए था क्योंकि यह लेखकों और पत्रकारों की ओर से किया गया और शायद पहली बार ऐसा हुआ। सम्मानस्वरूप लेखकों की ओर से एकत्र की गयी एक लाख रुपए की राशि हंसाक्षर ट्रस्ट में जमा की जायेगी। राजेन्द्र यादव का सम्मान उनके घर के बाहर खुले प्रांगण में किया गया।

कृष्ण सोबती ने अपने सम्बोधन में कहा कि 'हंस' के जरिए राजेन्द्र यादव ने बहुत बड़ी दुनिया बनाई है। डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि जिन्दगी जिंदादिली का नाम है और जिंदादिली राजेन्द्र यादव का नाम है।

अस्वस्थता के चलते यादव जी अभिनंदन जैसे इस समारोह में व्हील चेयर पर बैठकर आये। उन्होंने कहा कि मैं जीवन भर दो चीजों से बचता रहा—अभिनंदन और दूसरा यह कि मैं किसी पर आश्रित न रहूँ। उन्होंने बताया कि उन्होंने किसी भी तरह की सरकारी सहायता और अनुदान से बचने की कोशिश की। हमेशा यही चाहा कि लेखक की तरह अपनी बात कहूँ।

संचालन कर रहे कथाकार संजीव ने बताया कि लोक सम्मान की यह योजना छह-सात महीने पहले बनी थी। लेखकों-पत्रकारों की ओर से एकत्र की गयी यह सम्मान राशि एक तरह से मातृ ऋण, पितृ ऋण या गुरु ऋण की तरह है।

'पारिजात शिखर सम्मान'

विगत दिनों नई दिल्ली में डॉ० शंकरदयाल सिंह अमृत महोत्सव के तत्त्वावधान में पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री कर्णसिंह द्वारा युवा पत्रकार-साहित्यकार सुश्री सरिता सिंह को 'पारिजात शिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया।

काशी गौरव

वाराणसी। बुद्धिजीवी घुमक्कड़ मंच के तत्त्वावधान में पराड़कर स्मृति भवन में विगत 15 अप्रैल को विभिन्न क्षेत्रों के नामचीन लोगों को 'काशी गौरव' सम्मान दिया गया। विशिष्ट अतिथि डॉ० रामसुधार सिंह ने जगदीश नारायण सिंह की कृति 'भोजपुरी भाषा का उद्गम व विकास' का लोकार्पण किया। तत्पश्चात विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए संस्था द्वारा सम्मानित किया गया। इसमें डॉ० अशोक सिंह व डॉ० संजय राय (चिकित्सा), डॉ० देवब्रत भट्टाचार्य (संगीत), मदनमोहन देव (नृत्य), डॉ० रामसुधार सिंह (शिक्षा व साहित्य), राजेन्द्र त्रिवेदी एडवोकेट व श्रीमती मीना चौबे (समाज सेवा), अजय कुमार सिंह (विधि) व शशिधर इस्सर (पत्रकारिता) शामिल हैं। इस अवसर पर काव्यगोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

डॉ० हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान

विगत 15 अप्रैल को कोलकाता में सुप्रसिद्ध साहित्यिक-सामाजिक संस्था श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रवर्तित 23वाँ 'हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' भारतीय संस्कृति एवं कला के उन्नायक तथा 'संस्कार भारती' के संस्थापक श्री योगेन्द्रजी श्रीवास्तव को प्रदान करने की घोषणा की गई। सम्मान स्वरूप 51 हजार रुपये की राशि एवं मान-पात्र भेंट किया जायेगा।

श्री सन्तोष श्रीवास्तव को अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान

विगत दिनों साहित्य, संस्कृति एवं भाषा की अन्तर्राष्ट्रीय वेब पत्रिका 'सृजन गाथा डॉट कॉम' की ओर से 2012 का सातवाँ अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य सम्मान प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री संतोष श्रीवास्तव को उज्बेकिस्तान की राजधानी ताशकंद में 26 जून, 2012 को समारोहपूर्वक प्रदान किया जायेगा। पुरस्कार-स्वरूप अलंकरण-पत्र, प्रतीक-चिह्न, शॉल तथा साहित्यिक कृतियाँ दी जाएँगी। यह पुरस्कार प्रति वर्ष साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करनेवाले व्यक्तियों को प्रदान किया जाता है।

अम्बिकाप्रसाद दिव्य स्मृति पुरस्कार

भोपाल। पन्द्रहवें अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कारों की घोषणा दिनांक 20 अप्रैल को संयोजक श्री जगदीश किंजल्क द्वारा भोपाल में आयोजित एक समारोह में की गयी। श्री वेद प्रकाश कंवर (दिल्ली) को उनके उपन्यास, 'सेरीना' के लिये पाँच हजार रुपये राशि का, डॉ० सुधा ओम ढींगरा (यू.एस.ए.) को उनके कहानी संग्रह 'कौन सी जमीन अपनी' तथा श्री कैलाश पचौरी (बैरसिया) को उनके काव्य संग्रह, 'सन्नाटे की सुराही में' के लिये इक्कीस-इक्कीस सौ रुपये राशि के दिव्य पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। डॉ० नताशा अरोड़ा (नोएडा) उपन्यास—युगान्तर, श्री कुमार शर्मा अनिल (चंडीगढ़) कहानी संग्रह—रिश्ता रोजी से, श्री कुँवर किशोर टण्डन (भोपाल) काव्य संग्रह—सुबह से सुबह तक, श्री राजेन्द्र शर्मा 'अक्षर' (भोपाल) निबन्ध संग्रह—शब्द वैभव, डॉ० अशोक गुजराती (दिल्ली) बाल कहानी संग्रह—खुशी के लिये, डॉ. एम.एल.खरे (भोपाल) व्यंग्य संग्रह—मुझ से भला न कोय, श्रीमती आशमा कौल (फरीदाबाद) काव्य संग्रह—बनाये हैं रास्ते, श्री संतोष सुपेकर (उज्जैन) लघु कथा संग्रह—बंद आँखों का समाज तथा साहित्यिक पत्रिका के श्रेष्ठ सम्पादन हेतु केनेडा के श्री श्याम त्रिपाठी को हिन्दी पत्रिका 'हिन्दी चेतना' हेतु दिव्य रजत अलंकरण प्रदान किये जायेंगे।

संगोष्ठी/लोकार्पण

'आरण्यक' पर समीक्षा गोष्ठी

नवगठित संस्थान 'साहित्य की चौपाल', छत्तीसगढ़ के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी, कोलकाता के अध्यक्ष डॉ० स्वदेश भारती के नक्सली समस्या पर केन्द्रित सद्य: प्रकाशित उपन्यास 'आरण्यक' पर भिलाई में विगत 6 मार्च, 2012 को समीक्षा गोष्ठी सम्पन्न हुई। वरिष्ठ कवि एवं छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के महामंत्री श्री रवि श्रीवास्तव एवं युवा आलोचक डॉ० जयप्रकाश साव ने विशेष टिप्पणी दी। 'साहित्य की चौपाल' के संयोजक श्री अशोक सिंघई ने आलेख प्रस्तुत किया। शायर मुमताज ने गोष्ठी का संचालन व आभार ज्ञापित किया।

हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

विगत दिनों भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठियों के क्रम में '36वीं आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी' का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए डॉ० एस०एम० नानोटी ने कहा कि विगत दस वर्षों से अबाध गति से आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठियों का आयोजन निश्चित रूप से उपलब्धि का विषय है। उन्होंने राजभाषा अनुभाग के प्रभारी डॉ० दिनेश चमोला से अनुरोध किया कि वे इसी के अन्तर्गत वैज्ञानिक शब्दावली की ज्ञान परीक्षण प्रतियोगिता का भी आयोजन करें ताकि इससे प्रोत्साहित होकर इसमें और अधिक संख्या में वैज्ञानिक सहभागिता सुनिश्चित कर सकें।

संगोष्ठी का संचालन करते हुए दिनेश चंद्र चमोला ने कहा कि विज्ञान का लाभ तभी है जब वह जन समुदाय तक पहुँचे। अपनी वैज्ञानिक उपलब्धियों व अनुसंधानों को राष्ट्रभाषा में अभिव्यक्त करते हुए हमें गर्व का अनुभव करना चाहिए। वैज्ञानिक उन्नति में ही राष्ट्र की समग्र उन्नति सन्निहित है। अत: हिन्दी में विज्ञान चिंतन व लेखन दोनों ही राष्ट्रीय महत्त्व के कार्य हैं।

संगोष्ठी सत्र में विद्वानों ने विविध वैज्ञानिक विषयों पर हिन्दी में अपनी अपनी प्रभावी प्रस्तुतियाँ दीं तथा श्रोताओं के प्रश्नों का समाधान किया।

प्रलेस का राष्ट्रीय सम्मेलन

नई दिल्ली। प्रगतिशील लेखक संघ के तीन दिवसीय 15वें राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारम्भ विगत 12 अप्रैल को दिल्ली विश्वविद्यालय में हुआ। इस तीन दिवसीय सम्मेलन में देश-विदेश के प्रगतिशील लेखकों ने बड़ी संख्या में सहभागिता की।

इस अवसर पर वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी ने कहा कि कलाएँ शान्ति और सौहार्द की संवाहक होती हैं, इसलिए लेखकों की विरासत ही शान्ति और सौहार्द की रही है। शान्ति और सौहार्द विरोधी ताकतें सबसे पहले भाषा और संस्कृति पर चोट करती हैं। इन्हें बचाने के लिए एकजुट होना जरूरी है।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष नामवर सिंह के भाषण से हुई। 'शान्ति और सौहार्द के लिए लेखन' विषय पर केन्द्रित इस सत्र का विषय प्रवर्तन वरिष्ठ लेखक डॉ० असगर अली इंजीनियर ने किया। मिस्र से आए लेखक हिल्मी हदीदी, तमिलनाडु से आए वरिष्ठ लेखक पुन्नीलम, खगेंद्र ठाकुर, पाकिस्तान के बाबर आयाज, जापान से आए आकियो हागा ने भी सत्र को सम्बोधित किया। संचालन अली जावेद ने किया।

अगले सत्र में केरल से आए के०पी० राम नूनी, महाराष्ट्र से आए श्रीपाद जोशी, कोलकाता के गीतेश शर्मा ने अपने विचार रखे। उन्होंने पाकिस्तान और भारत के हालात एक जैसे बताते हुए यह भी कहा कि बहुसंख्यक धार्मिकता का विरोध करते हुए अल्पसंख्यक कट्टरता की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

पंजाब के रजनीश बहादुर, ओडिशा से आए एस०बी० कार, शाहिना रिजवी, बी० मोहनदास, बंगाल से कुसुम जैन, पंजाब के जोगिंदर अमल, आदि ने भी सम्मेलन को सम्बोधित किया।

काशी ही भोजपुरी की जननी

वाराणसी। विगत 9 अप्रैल को विश्व भोजपुरी संघ की ओर से संगोष्ठी व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

विषय प्रस्तावना पर विश्व भोजपुरी संघ के महासचिव अपूर्व नारायण तिवारी ने कहा कि भोजपुरी हजारों वर्षों से लोकभाषा के रूप में संस्कार की भाषा रही है। पं० जितेन्द्रनाथ मिश्र ने कहा कि यह एक ऐसी भाषा है जिसकी ब्राह्मी, कैथी, श्रीहर्ष, कुटिला, खरोष्ठी, नस्तालिक व देवनागरी लिपियाँ हैं। डॉ० अशोक सिंह ने कहा कि अंग्रेजी विद्वान जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने पूरबिया बोली को भोजपुरी नाम दिया, जो वस्तुत: आज प्रचलन में है। उन्होंने कहा कि भोजपुरी भाषा की जननी काशी है, जबकि कई लोगों को यह भ्रम है कि भोजपुरी का जन्म बिहार में हुआ। उन्होंने बताया कि संस्था की ओर से भोजपुरी के प्रचार-प्रसार के लिए इस साल जून में मारीशस में भोजपुरी फिल्म महोत्सव आयोजित किया जा रहा है जिसमें भोजपुरी फिल्में, कलाकार व निर्देशक शामिल होंगे। नवम्बर में दक्षिण अफ्रीका में अधिवेशन होगा जिसमें विभिन्न देशों के भोजपुरी भाषा बोलने वाले लोग शामिल होंगे। अध्यक्षता कर रहीं हुशिला देवी रिसौल ने भोजपुरी के प्रचार-प्रसार के लिए आमजन को आगे आने की अपील की व भोजपुरी एकेडमी खोलने का समर्थन किया।

समारोह में दयानन्द डिग्री कालेज के प्रो० हिन्दी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष जितेन्द्रनाथ मिश्र को 'साहित्य मनीषी' उपाधि से विभूषित किया गया। संस्था की मारीशस इकाई की अध्यक्ष हुशिला देवी रिसौल (प्रतिमा मिश्रा) को अलंकरण चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर हुशिला देवी ने भोजपुरी गीतों से ऐसा समाँ बाँधा कि श्रोता झूम उठे।

प्रसाद को समर्पित काव्य सन्ध्या

वाराणसी। विगत 7 अप्रैल को नव सृजन संस्था के तत्वावधान में महाकवि जयशंकर प्रसाद को समर्पित चैत चाँदनी गीत गुलाब कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें कवियों ने माटी से जुड़े गीतों की सोंधी गमक से महफिल को सजाया। पं० हरिराम द्विवेदी, रविकांत तिवारी, डॉ० अशोक सिंह, रामप्रवेश तिवारी, प्रभात प्रकाश शुक्ला, रंजना राय आदि ने रचनाएँ प्रस्तुत कीं। बतौर मुख्य अतिथि विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव अखिलेश मिश्रा (आईएफएस) ने स्वरचित काव्य रचना का पाठ भी किया।

महामूर्ख सम्मेलन

वाराणसी। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद घाट पर जुटी हजारों की भीड़। हर कोई महामूर्ख सम्मेलन में अपनी भागीदारी कराने को उतावला। कहीं भी तिल भर की जगह नहीं। घाट की सीढ़ियों से लेकर नीचे तक चारों तरफ भीड़ ही भीड़।

हास्य के सागर में लिहोरे व हिचकोले लेते हजारों मस्तमौला। अवसर था पहली अप्रैल को डॉ० राजेन्द्र प्रसाद घाट पर आयोजित महामूर्ख सम्मेलन का। इस आयोजन ने एक बार फिर काशीवासियों को वर्ष भर के लिए गुदगुदा कर रख दिया। पं० धर्मशील चतुर्वेदी के निर्देशन में आयोजित महामूर्ख सम्मेलन की शुरुआत गंधर्व ध्वनि व नगाड़े की गूँज से हुई। जर्मनी से आयी एक विदेशी महिला ने औपचारिक उद्घाटन करते हुए कहा कि दुनिया भर में पहली अप्रैल मनाया जाता है लेकिन जो आयोजन बनारस में होता है, वह अपने आप में बेमिसाल है।

लेखक से भेंट

नई दिल्ली। विगत 17 अप्रैल को साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम के अन्तर्गत कवि, कथाकार, निबन्धकार, चिंतक और आलोचक रमेशचन्द्र शाह ने कहा कि लेखक के लिए आत्मकथा में सच को पूरी तरह उजागर करना सम्भव नहीं है। उन्होंने जयशंकर प्रसाद की कविता की पंक्तियों और रवीन्द्रनाथ ठाकुर के कथनों के सहारे यह बताने की कोशिश की कि सत्य को परदे में रखकर ही पेश किया जाना चाहिए। सत्य को खुले में चलने-फिरने में दिक्कत होती है। उसे कल्पना के ढीले-ढाले लिबास में ही पेश होने में सहूलियत होती है।

शाह ने इस कार्यक्रम में अपनी बात कहने के पहले अपने चर्चित उपन्यास 'गोबर गणेश' की रचना प्रक्रिया का प्रसंग सुनाते हुए उसके प्रारम्भिक अंशों का पाठ किया।

आखिर में उन्होंने श्रोताओं के पूछे सवालों के जवाब देने के क्रम में अपने दूसरे उपन्यास 'किस्सा गुलाम' की रचना प्रक्रिया का रहस्य खोला। उन्होंने बताया कि इस उपन्यास को पहले उन्होंने अंग्रेजी में लिखा था। बाद में उसे अज्ञेय के कहने पर हिन्दी में लिखा, जिसे पाठकों ने बहुत पसन्द किया। कार्यक्रम का संचालन ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने किया।

'जैन आर्ट एण्ड एस्थेटिक्स' का लोकार्पण

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भारत कला भवन में विगत 7 अप्रैल को प्रो० मारुति नंदन तिवारी व डॉ० शान्ति स्वरूप सिन्हा लिखित पुस्तक 'जैन आर्ट एण्ड एस्थेटिक्स' का लोकार्पण किया गया।

मुख्य अतिथि ज्ञान प्रवाह के मानद आचार्य डॉ० नीलकंठ पुरुषोत्तम जोशी ने कहा कि जैन कला अत्यन्त दुरूह विषय है तथा उसमें समन्वय के स्वर को 'जैन आर्ट एण्ड एस्थेटिक्स' ग्रन्थ में रेखांकित किया गया है। अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने कहा कि जैन कला जितनी आध्यात्मिक है उतनी ही लोकरंजक भी। जैन कला के मूल तत्त्व विशेषत: शान्त रस की अभिव्यक्ति तीर्थंकर में सर्वश्रेष्ठ स्तर पर हुई है जिसकी इस पुस्तक में विवेचना की गयी है। विशिष्ट अतिथि डॉ० महेन्द्रनाथ राय ने कहा कि अभी तक जैन धर्म व कला पर कार्य नहीं हुआ है इस दृष्टि से यह कार्य महत्त्वपूर्ण है। पुस्तक के लेखक प्रो० मारुति नन्दन तिवारी ने पुस्तक का परिचय देते हुए कहा कि भारतीय कला केवल कला के लिए न होकर हमेशा समाज के लिए रही है। जैन कला में उसी समाज को अतीत के सन्दर्भ में और वर्तमान सामाजिक माडल के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

डॉ० भीष्म नारायण मालवीय मिशन केअध्यक्ष

वाराणसी। उ०प्र० के पूर्व राज्यपाल डॉ० भीष्म नारायण सिंह महामना मालवीय मिशन के पुन: अध्यक्ष चुने गये हैं। मिशन की कार्यकारिणी ने डॉ० सिंह को सर्वसम्मति से अध्यक्ष घोषित किया। महामना पं० मदन मोहन मालवीय के 150वीं जयन्ती वर्ष महोत्सव पर आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन के द्वितीय दिवस को 36 शोधपत्र प्रस्तुत किये गये व पं० मदनमोहन मालवीय के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया।

बिना अलंकार के नहीं हो सकती कविता

दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की ओर से विख्यात आलोचक डॉ० नगेन्द्र की स्मृति में आयोजित व्याख्यानमाला का प्रथम व्याख्यान देते हुए राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के कुलपति प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि कोई भी कविता बिना अलंकार के नहीं हो सकती। यहाँ तक कि साहित्य की दूसरी विधाओं की समीक्षा भी अलंकार के माध्यम से की जा सकती है। साहित्य के आस्वाद और उसकी समीक्षा के लिए अलंकार को एक व्यापक दृष्टि के रूप में देखा जाना चाहिए। अलंकार कोई बाह्य तत्त्व नहीं, यह कविता या साहित्य के अन्य रूप में पूरी तरह से न्यस्त है। उपमा और उपमान को भी वस्तु से अलग करना सम्भव नहीं है।

डायलॉग में कविता पाठ

एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट्स, नई दिल्ली की ओर से पिछले दिनों आयोजित कार्यक्रम 'डायलॉग' में कई वरिष्ठ और युवा कवियों ने काव्य-पाठ किया। रचना-पाठ के लिए प्रसिद्ध इस आयोजन में अशोक वाजपेयी, अनामिका, सुमन केशरी, मिथिलेश श्रीवास्तव आदि ने कविता पाठ किया। इस कविता संध्या की अध्यक्षता अशोक वाजपेयी ने की।

हिन्दी नवजागरण : वर्तमान सन्दर्भ

डॉ० रामविलास शर्मा फाउन्डेशन ने उनके 99वें जन्म दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का कार्यक्रम आयोजित किया, जिसका विषय था — 'हिन्दी नवजागरण : वर्तमान सन्दर्भ'। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता थे श्री कमेंदु शिशिर और अध्यक्षता की प्रो० शम्भुनाथ ने। इस अवसर पर उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए उनकी पारिवारिक पत्रिका 'सचेतक' के सम्पादक श्री रामशरण शर्मा मुंशी ने कहा कि आज की इस संगोष्ठी का विशेष महत्त्व है, क्योंकि आज से डॉ० रामविलास शर्मा का जन्मशती वर्ष आरम्भ हो रहा है। जहाँ तक हिन्दी नवजागरण का प्रश्न है, रामविलास इसकी शुरुआत 1857 के स्वाधीनता-संग्राम से मानते थे और उसे निरन्तरता में देखते थे।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे डॉ० विजय मोहन शर्मा ने कहा कि नवजागरण एक सांस्कृतिक आन्दोलन होता है, जिसे किसी देश की राजनीतिक, आर्थिक व्यवस्था को सुधारने के लिए और सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए किया जाता है। नवजागरण परिवार का भी होता है।

इस अवसर पर दो पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। 'रामविलास शर्मा' (लेखक-प्रो० शम्भुनाथ), 'सचेतक और डॉ० रामविलास शर्मा', इसके संकलनकर्ता हैं डॉ० विजय मोहन और डॉ० जसबीर त्यागी।

'बतरस' में उदय प्रकाश

आज गृहिणियाँ, वृद्ध, सेवा-निवृत्त या जो अच्छी स्थिति में हैं, वे उपन्यास लिख रहे हैं। कहानीकार मन्टो भटकता था। जीवन अस्थिर था, तब उन्होंने जो कहानियाँ लिखीं, वे आज भी बेचैनी, छटपटाहट पैदा करती हैं। कठिनाइयाँ ही लेखक को बड़ा बनाती हैं. ये विचार प्रतिष्ठित कथाकार उदयप्रकाश ने श्रुति संवाद साहित्य कला अकादमी एवं 'बतरस' संस्था द्वारा सांताक्रुज में सम्पन्न कार्यक्रम में व्यक्त किये।

श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर में उदयप्रकाश ने कहा कि रचनात्मकता शुरू होते ही विद्वता समाप्त हो जाती है। जैसे जिन्दगी वहीं से शुरू होती है, जब आदमी साँस लेना शुरू कर देता है। जीवन में कुछ प्रश्नों के उत्तर नहीं होते, लेकिन प्रश्न ही उत्तरों की तलाश हैं। अध्यक्षता लोकप्रिय गीतकार माया गोविंद ने की।

साहित्य अकादमी का 'बहुभाषी रचना-पाठ'

'भारतीय साहित्य को एक आकार देकर उसकी पहचान बनाने के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच परस्पर अनुवाद बेहद जरूरी है'—उक्त विचार देश के विख्यात वरिष्ठ कवि/आलोचक केदारनाथ सिंह ने साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा आयोजित बहुभाषी रचना पाठ कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए।

समारोह की मुख्य अतिथि और डोगरी की महत्त्वपूर्ण कवियत्री वीणा गुप्ता ने डोगरी भाषा में नारी विमर्श की उपस्थिति के बहुत पहले होने के उदाहरण देते हुए कहा कि उन्हें सामने लाने की पहल अनुवाद के जरिए ही सम्भव है। अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष तथा वरिष्ठ कवि और आलोचक प्रो० विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने कहा दूसरी भाषाओं का उत्कृष्ट साहित्य भी अनूदित होना चाहिए।

भारत भवन की 30वीं वर्षगाँठ पर समारोह

विगत दिनों भोपाल में भारतीय साहित्य और संस्कृति के बहुकला केन्द्र 'भारत भवन' की 30वीं वर्षगाँठ का समारोह आयोजित किया गया। समारोह में कला प्रदर्शनियाँ और संगीत, नृत्य, कविता, फिल्म, नाटक से सम्बन्धित प्रस्तुतियाँ दी गईं। इनके अलावा दो बहुचर्चित फिल्मों का प्रदर्शन भी हुआ, जिनमें संगीतकार मोजार्ट के जीवन पर आधारित 'एमेडिया' और फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी पर आधारित 'तीसरी कसम' शामिल हैं।

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी की पुस्तकें लोकार्पित

विगत 15 अप्रैल को नई दिल्ली में वरिष्ठ कवि श्री अशोक वाजपेयी ने कलम के जादूगर श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी की तीन पुस्तकों 'श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी : चित्रों में' तथा 'श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी का बाल साहित्य' भाग एक और दो का लोकार्पण किया।

हरिवंशजी की दो पुस्तकों का लोकार्पण

विगत 15 अप्रैल को राँची में प्रखर चिन्तक, पत्रकार एवं 'प्रभात खबर' के प्रधान सम्पादक श्री हरिवंश की झारखण्ड पर केन्द्रित दो पुस्तकों 'झारखण्ड : सपने और यथार्थ' एवं 'झारखण्ड : समय और सवाल' का लोकार्पण झारखण्ड के मुख्यमंत्री माननीय श्री अर्जुन मुंडा के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

पुस्तक परिचय

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानियाँ

सम्पादन : **हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वारा.**

प्रथम संस्करण : 2012 ई०
पृष्ठ : 288

सजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-891-9
अजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-7124-893-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी कहानियों का यह संग्रह स्वतन्त्रता के पश्चात की कहानियों की परम्परा सुलभ कराता है। गुलेरी, प्रसाद, प्रेमचंद, यशपाल, जैनेन्द्र, अज्ञेय आदि के बाद हिन्दी कहानी के परिवर्तनों के चिह्न इन कहानियों में उपस्थित हैं। पहली कहानी 'प्रभा' (राहुल सांकृत्यायन) ठीक स्वतन्त्रता के पूर्व के कथा-परिदृश्य की झलक देती है। शेष कहानियों में हिन्दी कहानी के प्रमुख आन्दोलन 'नयी कहानी' की छाप है या 'अकहानी' की प्रवृत्तियाँ इंगित होती हैं या फिर आन्दोलनों के उतार के पश्चात कहानी का मन-मिजाज दृष्टिगोचर होता है। कालक्रम से देखा जाये तो सन् 1942 से 2005 के बीच से ये कहानियाँ आती हैं। इस अवधि के बीच श्रेष्ठ कहानियाँ अन्य भी हो सकती हैं। पर एक संग्रह में कहानियों की एक सीमा भी होती है। मूलत: यह संग्रह 'स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानियाँ', काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर (हिन्दी) के चतुर्थ समेस्टर में 'विशेष अध्ययन : स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य' पाठ्यक्रम में निर्धारित कहानियों के आधार पर तैयार हुआ है। पर यहाँ इस दौर के प्रतिनिधि कहानीकारों की कहानियाँ क्रमबद्ध हैं। अत: यह संकलन जितना विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है उतना ही कहानी के मुरीद पाठकों के लिए भी।

कहानियों के पहले ही प्रस्तावना के रूप में दो निबन्ध रखे गये हैं। इनमें से पहले में डॉ० नीरज खरे ने 'स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी की दिशाएँ' संकलित कहानियों को ध्यान में रखकर रेखांकित की हैं। दूसरे में प्रो० चम्पा सिंह ने प्रकाशन क्रम से 'कहानियाँ और कहानीकार' पर विचार करते हुए उनका विश्लेषण किया है। आशा है इससे विद्यार्थियों और पाठकों को कहानियों के आस्वादन और पठन में सहयोग मिलेगा।

एक सुबह और मिल जाती

[कहानी संग्रह]

डॉ० बाबू राम त्रिपाठी

प्रथम संस्करण : 2012 ई०
पृष्ठ : 88

सजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-81-7124-873-5

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'एक सुबह और मिल जाती' कहानी-संग्रह में बारह कहानियाँ हैं, जो समाज के यथार्थ को उजागर करती हैं। यथार्थ-निरूपण अमर्यादित न हो जाय, इसका पूरा ध्यान रखा गया है। इसके अतिरिक्त भावबोध को शिल्पगत क्लिष्टता से बोझिल होने से भी बचाने का प्रयास हुआ है।

संग्रह की पहली कहानी 'एक सुबह और मिल जाती' में एक ऐसे व्यक्ति की छटपटाहट को व्यक्त किया गया है, जिसका जीवन दूसरों को क्षति पहुँचाने में ही बीतता है और जब कभी उसकी आँख खुलती भी है, तो देर हो चुकी होती है। प्रायश्चित के लिए भी उसके पास समय नहीं रहता।

'पापा अब मैं स्कूल जाऊँगा' कहानी एक ऐसे बच्चे की मानसिकता को प्रस्तुत करती है, जिसका मन पढ़ाई-लिखाई में न लगकर रात-दिन शरारतों में सक्रिय रहता है। उसे जब अपने लोगों के उपेक्षात्मक व्यवहार से ठोकर लगती है, तब जाकर वह रास्ते पर आता है।

प्रेम स्वार्थ की भित्ति पर बहुत दिन तक नहीं टिकता, वह त्याग और बलिदान की अपेक्षा रखता है। 'अब तो कुट्टी नहीं करोगी न?' शीर्षक कहानी में स्वार्थ और वासना की जगह प्रेम की पवित्रता एवं कर्त्तव्य पर बल दिया गया है।

कभी-कभी मनुष्य की सद्वृत्तियाँ उसकी आसुरी प्रवृत्ति को दबाकर किस तरह मानवीय संवेदना की सुगन्ध बिखेर जाती हैं, इस तथ्य को 'अजातशत्रु' कहानी में देखा जा सकता है। आज के इस अशान्त और भयावह वातावरण में बनवारी जैसे भी भोले-भाले इंसान हैं, जिनकी इंसानियत के सामने हिंसक प्रवृत्ति को नतमस्तक होने के लिए विवश होना पड़ता है। 'अजातशत्रु' कहानी ऐसे ही शरीफ इंसान के चरित्र को उकेरती है।

आज जब विज्ञान अपनी प्रगति की पराकाष्ठा पर है, मानव चन्द्रमा पर पहुँच रहा है, तो ऐसे युग में भी समाज में अन्धविश्वास अपनी जड़ें जमाये बैठा है। लोग भूत-प्रेत, टोना-टोटका आदि के चक्कर में पड़कर न केवल अपनी सुख-शान्ति गँवाते हैं, अपितु स्वयं को जोखिम में भी डाल लेते हैं। 'हदस' कहानी इस तरह के अन्धविश्वास का पर्दाफाश तो करती ही है, साथ-साथ उस पर प्रहार भी करती है।

आज जब स्वार्थ, ईर्ष्या-द्वेष, चोरी-बेईमानी आदि दुष्प्रवित्तियाँ खुलकर तांडव कर रही हैं, चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है, ऐसे विषाक्त वातावरण में भी कुछ ऐसे नेक इंसान हैं, जो अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जीते हैं। 'नगीनापुर का मसीहा' कहानी के नायक को स्वयं के सुख-दु:ख की अपेक्षा अपने गाँव-देश के सुख-दु:ख की चिन्ता अधिक सताती है।

मनुष्य का बहुत सीधा होना भी ठीक नहीं है, लोग उसका नाजायज फायदा उठाते हैं। 'सनक' कहानी के नायक की शराफ़त को उसके परिवार वाले उसकी भीरुता समझते हैं, पर जब उसका क्रोध मुखर हो उठता है, तब सब होश में आ जाते हैं।

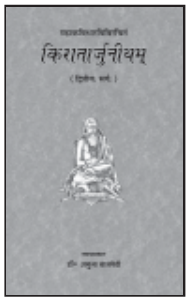

महाकविभारविविरचितं किरातार्जुनीयम्

(द्वितीय: सर्ग:)

व्याख्याकार :
डॉ० अनुभा बाजपेयी

प्रथम संस्करण : 2012 ई०
पृष्ठ : 152

अजि. : रु० 50.00 ISBN : 978-81-7124-890-2

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

संस्कृत काव्य की यह विशेषता है कि वह जनसाधारण के मनोभावों और वृत्तियों का चित्रण व विश्लेषण बड़ी ही कमनीय भाषा में प्रस्तुत करता है। वह मानव की कोमल वृत्तियों के वर्णन में जितना कृतकार्य है, उतना ही वह उसकी उग्र वृत्तियों के अंकन में भी समर्थ है। राग-द्वेष, हर्ष-विषाद, प्रेम-करुणा, उत्साह-अवसाद आदि भावों के चित्रण में संस्कृत कवियों की मनोहारी भाषा, भाव-प्रवण शैली और शब्द-लालित्य का वैभव देखते ही बनता है। संस्कृत महाकाव्य किरातार्जुनीयम् के प्रणेता महाकवि भारवि का नाम संस्कृत काव्यधारा के शीर्ष कवियों में आदर के साथ लिया जाता है। किरातार्जुनीयम् का कथानक यद्यपि महाभारत से लिया गया है, तथापि इसकी सामयिक प्रासंगिकता वर्तमान युगबोध को स्पर्श करती है इसलिए पाठक पर यथेष्ट प्रभाव भी छोड़ती है।

यह पुस्तक किरातार्जुनीयम् के गूढ़ श्लोकों की सरल टीका प्रस्तुत करने का एक प्रयास मात्र है। इस पुस्तक को पूर्ण रूप से छात्रोपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। संस्कृत व्याख्या में क्लिष्ट शब्दों का निषेध तथा टिप्पणी एवं व्याख्या भाग में महाकवि भारवि का विशिष्ट अर्थभाव यथामति जस का तस रखने का प्रयास किया गया है।

महाकवि भारवि संस्कृत वाङ्मय के अमूल्य रत्न थे। वे आज भी अपनी तेजोमय आभा के साथ अपनी कृतियों में विद्यमान हैं। उनकी कृति **किरातार्जुनीयम्** का विलक्षण प्रभाव उसे महाकाव्य की कोटि प्रदान करता है। इस ग्रन्थ में वर्णित नीति-श्लोकों का अर्थ-गौरव प्रसिद्ध है। महाकवि की प्रशस्ति में लिखी यह उक्ति दृष्टव्य है—

विमर्दे व्यक्तसौरम्या भारती भारवेः कवेः।
धत्ते बकुलमालेव विदग्धानां चमत्क्रियाम्॥

—अज्ञात

महाकवि भारवि के बारे में सर्वाधिक प्रचलित प्रशस्ति '**भारवेर्थगौरवम्**' से कवि और कृति दोनों की महत्ता स्पष्ट होती है। इस कृति का कथानक महाभारत से लिया गया है। कवि ने इस ग्रन्थ में अपने काव्य-कौशल का सफल परिचय दिया है। रचना शैली अत्यन्त मनोहर एवं अर्थ गौरव से परिपूर्ण है। '**किरातार्जुनीयम्**' में महाकाव्य के समस्त लक्षणों का सर्वथा निर्वाह किया गया है। इस ग्रन्थ को यदि हम महाकाव्य-लक्षण की कसौटी पर परखें तो यह और अधिक कान्तिमय दृष्टिगत होता है। यह उस काव्यरूपी सरिता के समान है, जिसमें जितने अधिक गोते लगाओ, उतना ही अधिक आनन्द प्राप्त होता है।

नाटक बनती देशी/विदेशी चित्र/विचित्र कहानियाँ

डॉ० भानुशंकर मेहता

प्रथम संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 116

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-89498-45-0

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न डॉ० भानुशंकर मेहता की यह कृति विभिन्न भाषाओं के लेखकों द्वारा लिखी गई दिलचस्प और मनोरंजक कहानियों का नाट्य रूपांतर है। बंगला, गुजराती, मराठी, अंग्रेजी और हिन्दी। 'कठपुतली' और 'नृत्य नाटिका' नाटक की ही विधाएँ हैं। **पुत्रदा** का नाट्य रूपांतरण 'कठपुतली' विधा में और **चांडालिका** का 'नृत्य नाटिका' विधा में किया गया है। लेखक की विशिष्टता यह है कि उसने रूपांतरण की प्रक्रिया में मूल रचना की आत्मा को मरने नहीं दिया है।

विषय के अनुरूप भाषा-शैली की संरचना में डॉ० मेहता को महारत हासिल है। रूपांतरित नाटकों की भाषा सरल और बोधगम्य है इसलिए हर वर्ग का पाठक इनका आनन्द उठाता है। बानगी के तौर पर प्रस्तुत है **वोटर विलाप** का एक संवाद—

आकाशवाणी - 'हे वोटर, दुखी न हो, जा अपने कोटर में विश्राम कर। मैं फिर लौटूँगी—पाँच वर्ष बाद। पाँच वर्ष तक अभाव की अग्नि में तपकर साधना कर। तब मैं फिर आऊँगी, इस बार वादों की और बड़ी गठरी लेकर—तब तक प्रिय—विदा!'

एकालाप शैली में रूपांतरित इस नाटक की रोचकता स्वयंसिद्ध है। डॉ० मेहता ने नाटक में व्यंग्य का पुट देने में अपने व्यंग्यकार की प्रतिभा का इस्तेमाल किया है जिससे नाटक मन को स्पर्श करने में समर्थ बन पड़ा।

इस संकलन में रूपांतरित नाटकों की संख्या बीस है। सभी रुचिकर हैं और पाठक तथा दर्शक से तादात्म्य स्थापित करने में सक्षम हैं। किसी नाटक की खास विशेषता यह होती है कि वह दर्शक से किस हद तक संप्रेषित होता है या नाटक और दर्शक के बीच साधारणीकरण होता है। दर्शक नाटक के पात्रों को कितना जी पाता है। इस संकलन के नाटक इस कसौटी पर पूर्णरूप से खरे उतरते हैं। सभी नाटक मंचित होने योग्य तो हैं ही, पढ़कर आनंद उठाने योग्य भी हैं। इन्हें कहानी और उपन्यास की तरह पढ़कर रोमांचित हुआ जा सकता है, मन को रंजित किया जा सकता है।

हमें विश्वास है कि पाठक इस पुस्तक का भरपूर स्वागत करेंगे। इससे हमारा उत्साह तो बढ़ेगा ही लेखक को तृप्ति का अनुभव भी होगा।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

कौंधती अनुगूँजें

(कविता)

डॉ० मंजु द्विवेदी

प्रथम संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 112

सजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-81-7124-892-6

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मंजु का प्रथम काव्य संग्रह 'कौंधती अनुगूँजें' समकालीन परिदृश्य का जीवन्त और सहज तथा व्यवस्था व आम जन की समस्याओं का ज्वलन्त उदाहरण अंकित करता है।

हर कविता की प्रस्तुति आकर्षक एवं जीवंतता लिए हुए है जिससे पाठक उद्देश्यपरक जीवन शैली को अपने हृदय में उतारने के लिए विवश होंगे, उनके जीवन का रंग आध्यात्म से ओत प्रोत हो जायेगा। बीच-बीच में कवयित्री ने अपने ही लोगों की संवेदनशून्यता और सामाजिक विसंगतियों से अपने जूझने का व्यथित मन से चित्रण किया है और ऊब कर समाज की सच्चाई का पक्षधर बनने की नसीहतें दी हैं, समूची दोषपूर्ण व्यवस्था पर तीखा प्रहार भी किया है। इनका काव्य लेखन जीवन की मिठास विविधताओं की अनुभूति को सत्य की कसौटी पर कसकर कहीं मंथर गति से तो कहीं सामंजस्यता से और कहीं त्वरित गतिमान सहजता से लिपिबद्ध हुआ है।

सौन्दर्यलहरी : तन्त्र-दृष्टि और सौन्दर्य-सृष्टि

प्रभुदयाल मिश्र

द्वितीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 128

सजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-81-7124-895-7

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

लेखक ने इस कृति के 'विशेष संस्करण' का कलेवर पुस्तक के दर्शन, तन्त्र और साहित्य पक्ष को अक्षुण्ण रखते हुए तैयार किया है। यहाँ इतना अवश्य कहा जा सकता है कि कभी-कभी कविता कर्म को साधना कार्य का पर्याय भी माना जा सकता है। ऐसे में उसकी अनुष्ठानात्मक शक्ति बेजोड़ हो जाती है। जब कोई कविता शुद्ध साधनात्मक ही हो तो वह न केवल कविताकार, अपितु उसके पाठक और रस श्रोताओं की जीवन दृष्टि बदल सकती है। सौन्दर्यलहरी के 103 श्लोकों के मन्त्र और यन्त्रपरक प्रयोग लोक प्रसिद्ध हैं। कुछ प्रख्यात विश्वविद्यालयों में सौन्दर्यलहरी संस्कृत स्नातकोत्तर परीक्षा के पाठ्यक्रम में स्वीकृत है। अनेक आध्यात्मिक संगठन इस ग्रन्थ का नियमित पाठ-पारायण करते हैं। इसके श्लोकों को मन्त्रात्मक मानते हुए इसके जप, हवन और अनुष्ठान की अनेक विधियाँ प्रचलित हैं। इस पुस्तक में इन श्लोकों के यन्त्र, उनके पूजन विधान तथा इनके प्रयोगों के विवरण परिशिष्ट 2 में दिये गये हैं किन्तु इस रचना के सन्दर्भ विषय-विशेष से न हटने के ध्येय से उनका अधिक विस्तार नहीं किया गया है। लेखक ने विशेष संस्करण की भूमिका में इस ग्रन्थ के स्वयं के लिए एक 'विधान' का उल्लेख किया है तथा बताया है कि उन्होंने नागपुर में एक साधना मण्डल द्वारा सौन्दर्यलहरी के पाठ के पश्चात वितरित जल से अनेक असाध्य रोगों का निवारण होते सुना है।

अथर्ववेद के आठवें काण्ड के नवम् सूक्त में सृष्टि के सम्बन्ध में जो विचार किया गया है वह 'सौन्दर्यलहरी' के दर्शन की वैदिक पीठिका के रूप में परम उपयोगी है। ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में भी ऋषियों ने वाक् शक्ति के रूपों को दो भिन्न-भिन्न दृष्टियों से देखा है। वाक् शक्ति के इन रूपों के स्पष्ट दर्शन से 'सौन्दर्यलहरी' की 'श्रीविद्या' की उर्मिल चिदानन्द लहरियाँ अवगाहन का आमन्त्रण देने लगती हैं।

एक दिन किताबों के नाम

विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस

लैपटॉप या नेट पर मौजूद चमकते अक्षरों में वो बात कहाँ, जो पालथी मारकर अखबार, पत्रिका या किताब पढ़ने में है। यही वजह है कि किताबों की इस पहचान को बनाये रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनेस्को यानी युनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एण्ड कल्चरल आर्गेनाइजेशन ने विश्व पुस्तक और कॉपी राइट डे मनाने का निर्णय लिया। इसकी शुरुआत 23 अप्रैल, 1995 को हुई। इसकी नींव स्पेन के लेखक मीगुयेल डी सरवेंटीस को सम्मानित करने को रखी गयी। संयोग से उनका देहान्त भी इसी दिन हुआ था। वे 'द इनजेनस जेंटलमैन डॉन क्विजोट ऑफ ला मांचा' के रचनाकार थे, जिसे यूरोपीय साहित्य का पहला उपन्यास माना जाता है। शेक्सपियर के जन्म और मृत्यु का दिन भी यही माना जाता है। फ्रांस के उपन्यासकार मारिसे ड्रयन और आइसलैंड के साहित्यकार हैलडोर किजन लैक्सनेस का जन्म भी इसी दिन हुआ। यह आयोजन अब दुनिया के सभी देशों में किया जाता है। इंग्लैंड और आयरलैण्ड को छोड़कर। वहाँ यह आयोजन 3 मार्च को होता है।

वर्तमान विश्व पुस्तक राजधानी अर्जेंटीना का राजधानी शहर ब्यूनस आयर्स है। आर्मेनिया का शहर येरेवान 23 अप्रैल 2012 से 22 अप्रैल 2013 तक विश्व पुस्तक राजधानी रहेगा। भारत के राजधानी शहर दिल्ली को वर्ष 2003 में विश्व पुस्तक राजधानी होने का गौरव प्राप्त हुआ था। इस दिवस का उद्देश्य पठन एवं प्रकाशन को प्रोत्साहित करना एवं बौद्धिक सम्पदा को कॉपीराइट के द्वारा संरक्षा प्रदान करना है।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, छात्रों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी – 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

स्मृति शेष

पृथ्वीराज मोंगा का निधन

नेशनल बुक ट्रस्ट के पूर्व हिन्दी सम्पादक एवं हिन्दी कथा साहित्य के सुपरिचित हस्ताक्षर पृथ्वीराज मोंगा का 18 फरवरी, 2012 को नई दिल्ली में देहावसान हो गया। विदित हो कि श्री मोंगा की कहानियों का एक संकलन 'पृथ्वीराज मोंगा संकलित कहानियाँ', नवसाक्षर साहित्यमाला के अन्तर्गत उनकी दो अन्य पुस्तकें 'अपने बेगाने' तथा 'मास्टर जी' प्रकाशित हो चुकी हैं।

पत्रकार श्री राजेन्द्र भट्ट का निधन

विगत 19 मार्च को जयपुर में राजस्थान के वरिष्ठ पत्रकार और साहित्यकार श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट का निधन हो गया। उन्होंने प्रदेश के कई संस्थानों में बतौर पत्रकार काम किया। स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान ही उन्होंने पत्रकारिता आरम्भ कर दी थी। वे हिन्दी दैनिक नवज्योति के सम्पादक भी रहे। उन्हें प्रतिष्ठित महाराजा मेवाड़ फाउण्डेशन समेत कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था।

बलई काका का काव्य मंच पर ही निधन

विगत 5 अप्रैल को उन्नाव में आयोजित 'साहित्य भारती' के वार्षिक काव्य समारोह में रात्रि लगभग 1.30 बजे श्री रमेश चंद्र श्रीवास्तव उर्फ बलई काका (फिल्म जगत के हास्य अभिनेता राजू श्रीवास्तव के 82 वर्षीय पिता) काव्य पाठ के लिए मंच पर आमन्त्रित किये गये। तभी काव्यपाठ के दौरान उन्हें दिल का दौरा पड़ा और उनका निधन हो गया। समारोह में उपस्थित समस्त कवि, साहित्यकार, श्रोता स्तब्ध रह गये।

बलई काका ने पूरे रौ में माइक संभाला और अपनी रचना की शुरुआत ही काव्य मंच के गौरव काकाओं से की। काव्य पाठ में वह बोले, 'काव्य मंच की शान रहे बैसवारे के चार काकाओं में दो रमई काका और बच्चू काका साथ छोड़ गये हैं। दो बचे काका में काका बैसवारी व हम बलई काका आप के बीच हैं।' बलई काका इन पंक्तियों को दोहरा ही रहे थे तभी अचानक पल भर के लिए उनके हाथ कँपकपाये और देखते-देखते वह मंच पर ही गिर गये।

छिप गया उर्दू अदब का सितारा

प्रसिद्ध उर्दू साहित्यकार व आलोचक प्रो० कमर आजम हाशमी का विगत 5 अप्रैल को देर रात मुजफ्फरपुर में इंतकाल हो गया। वह काफी समय से बीमार थे। उनके इंतकाल की खबर मिलते ही शोक की लहर दौड़ गयी।

प्रो० कमर आजम हाशमी उर्दू साहित्य फलक पर चमकने वाले ऐसी शख्सियतों में एक थे जिनका लोहा देश ही नहीं विदेशों में भी माना जाता था। वे अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में कोर्ट के मेंबर और जामिया मिलिया विश्वविद्यालय में मजलिस के सदस्य भी थे। बिहार अंजुमन तरक्की उर्दू के संस्थापकों में रहे। बिहार विश्वविद्यालय में चार बार सीनेट के सदस्य रहे। उर्दू ड्रामा निगारी, अदबी तकलीमा, तनकीदी जारीए, बिहार में उर्दू नज्म निगारी समेत उन्होंने दर्जनों किताबें लिखीं।

कवि ग्रेस का निधन

साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता कवि ग्रेस का विगत 26 मार्च 2012 को आकस्मिक निधन हो गया। वह 75 वर्ष के थे और कैंसर से पीड़ित थे। नागपुर में उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

डॉ० रमेश दत्त शर्मा का निधन

प्रख्यात विज्ञान लेखक डॉ० रमेश दत्त शर्मा का दिल्ली में विगत 6 फरवरी, 2012 को निधन हो गया। डॉ० शर्मा का जन्म 15 फरवरी, 1939 को उत्तर प्रदेश में एटा जिले के जलेसर कस्बे में हुआ। उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से बी०एस-सी० तथा एम०एस-सी० (वनस्पति विज्ञान) की उपाधियाँ और गढ़वाल विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० की उपाधि अर्जित की। डॉ० रमेश दत्त शर्मा विज्ञान संचार के सिद्धहस्त विशेषज्ञ थे।

साहित्यकार डॉ० प्रेमचंद गोस्वामी का निधन

विगत 14 मार्च को बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्रयोगधर्मी चित्रकार-कलाकार-कलाविद् डॉ० प्रेमचंद गोस्वामी का निधन हो गया। वे जीवन भर आधुनिक प्रयोगवादी चित्र-सृजन में लगे रहे और अनेकों चित्रों की रचना की। 28 जुलाई, 1936 को बीकानेर में जनमे डॉ० गोस्वामी ने अपना कलाकर्म जीवन के अन्तिम दौर तक जारी रखा। उन्हें राजस्थान ललित कला अकादमी के सर्वोच्च कला सम्मान 'रत्न सदस्यता', साहित्य अकादमी, उदयपुर के 'अकादमी पुरस्कार' तथा राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया था। कहानी, नाटक, बाल-साहित्य, निबन्ध-लेखन एवं कला विषयक उनकी 40 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन उनकी कला-साहित्य में अपार रुचि होने का प्रमाण है। डॉ० गोस्वामी की शताधिक वार्त्ताएँ आकाशवाणी से प्रसारित हुईं। वे राजस्थान विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विषय के प्रथम प्रभारी व्याख्याता भी रहे।

'भारतीय वाङ्मय' परिवार अपनी अश्रुपूरित भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

साहित्यकार युगेश्वर नहीं रहे!

सुप्रसिद्ध साहित्यकार व आलोचक 78 वर्षीय प्रो० युगेश्वर का शनिवार, 28 अप्रैल को पूर्वाह्न 11.30 बजे वाराणसी के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। वे हृदयरोग से पीड़ित थे। प्रो० युगेश्वर का जन्म 10 जनवरी 1934 को बिहार के सेखपुर गाँव में हुआ था। आप वर्ष 1962 में महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ में प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए और वर्ष 1994 में विद्यापीठ के प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त हुए। उनका लेखन हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान, पं० दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान, विद्याभूषण सम्मान, अखिल भारतीय विद्वत परिषद सम्मान, जगतगुरु रामानंदाचार्य पुरस्कार और वर्ष 2004 में संत तुलसीदास सम्मान सहित अन्य पुरस्कारों से अलंकृत था। प्रो० युगेश्वर द्वारा लिखित 'कोकिल बोल रहा', 'हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य' (विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित), 'आधुनिक साहित्य के विविध रंग', 'रैदास समग्र' सहित चार दर्जन से अधिक आलोचना पाठ, टीका, विचार प्रधान आलेख, उपन्यास, पुराण, ललित निबन्ध प्रकाशित हो चुके हैं। प्रो० युगेश्वर के निधन से एक युग का अन्त हो गया। वे हिन्दी साहित्य की चिन्तनधारा की थाती थे।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

कही-अनकही : डॉ० पीतवास मिश्र, प्रकाशक : नूरानी पब्लिशर्स, 176/241, आजाद नगर, सुंदरपदा, भुवनेश्वर-2, ओड़िशा, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 100/- रु०

× × डॉ० पीतवास मिश्र की मूल ओड़िआ-रचना 'नाना कथा नाना व्यथा' का हिन्दी अनुवाद श्री कुदरत अली कुदरत द्वारा प्रस्तुत किया गया है, ग्रन्थ का सम्पादन किया है डॉ० सुशील दाहिमा 'अभय' ने। ओड़िया पत्रों के सफल पत्रकार-लेखक डॉ० पीतवास मिश्र ने इस पुस्तके के निबन्धों में अपने आस-पास के उत्कल-समाज, सम्पन्न-संस्कृति और आर्थिक शोषण एं राजनयिक दबावों के बीच उभरते दारिद्रय के 'काला हांडी' का हृदयग्राही चित्रण प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय है।

ललाई : कैलाश चन्द्र लाल, प्रकाशक : इन्द्रा प्रकाशन, बहरियाबाद, गाजीपुर (उ०प्र०), संस्करण : प्रथम, मूल्य : 150/- रु०

× × कविता-संग्रह की कविताओं के रचयिता के भावोद्‌गार का उच्छास एवं प्रकृतिकी लालिमा।

भारतवाणी (अप्रैल 2012) : सम्पादक : डॉ० चंदूलाल दुबे, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड-580001

वसुधा : सम्पादक : स्वयं प्रकाश, मायाराम सुरजन स्मृति भवन, शास्त्रीनगर, पी०एण्ड टी० चौराहा, भोपाल (म०प्र०) 462003

साक्षात्कार (अंक 338, अप्रैल 2012) : सम्पादक : प्रो० त्रिभुवननाथ शुक्ल, प्लाट-12, एस० 204, सरिता पार्क व्यू अपार्टमेंट, ई-8, त्रिलंगा, भोपाल-462039

विवरण पत्रिका (अप्रैल 2012) : सम्पादक : एम० प्रभुजी, हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद, नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-500001

प्रोत्साहन : प्रधान सम्पादक : श्रीमती कमला जीवितराम सेतपाल, ई-3/307, इन्लैक्स नगर, यारी रोड, वर्सोवा, अन्धेरी (पश्चिम), मुम्बई-400061

वार्ता वाहक (अप्रैल 2012) : सम्पादक : रवि शतपथी, हिन्दी शिक्षा समिति, ओड़िशा शंकरपुर, अरुणोदय मार्केट, कटक-753012 (ओड़िशा)

हरिगंधा (जनवरी-फरवरी 2012, कथा विशेषांक) : प्रधान सम्पादक : डॉ० कृष्ण कुमार खण्डेलवाल, हरियाणा साहित्य अकादमी, अकादमी भवन, पी-16, सेक्टर 14, पंचकूला-134113 (हरियाणा)

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 13 **मई 2012** **अंक : 5**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2012-14 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. Stock/RNP/vsi E/001/2012-2014

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : **sales@vvpbooks.com** ● Website : **www.vvpbooks.com**